राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 16.00 संख्या 100
खूनी खानदान
सुपर कमांडो ध्रुव
एक ग्रीन कार्ड मुफ्त
by अनुपम
1997

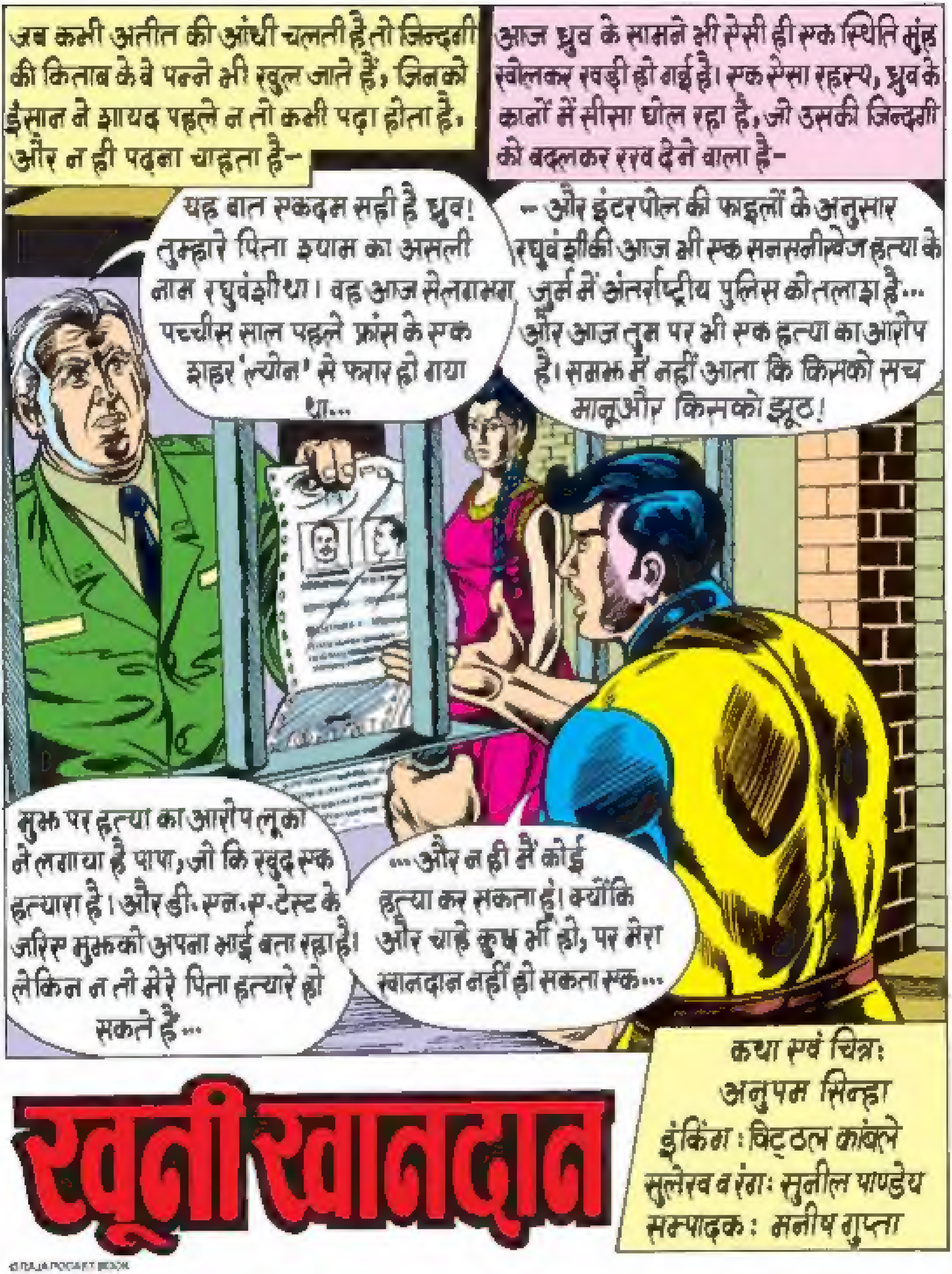

© RAJA POCKET BOOKS

राजनगर- एक ऐसा महानगर, जिसकी जड़ों में अपना फन फैलाए छिपा रहता है अपराध का काला नाग! लेकिन यह नाग अपना फन बहुत सोच-समझकर उठाता है। क्योंकि सब जानते हैं कि यह फन उठाते ही कुचल दिया जाएगा। और उसको कुचलने वाला पैर होगा...
...सुपर कमांडो ध्रुव का! राजनगर के उस रखवाले का, जिसको आज तक अपराध का यह नाग लाख चाहने पर भी डस नहीं पाया-
इसीलिए राजनगर में जो भी अपराध का प्लान बनाया जाता है, वह सिर्फ एक ही शख्स को ध्यान में रखकर बनाया जाता है...
...सुपर कमांडो ध्रुव को-
उस दुष्ट का ध्यान बंटाने का यह फर्स्ट क्लास रास्ता है!...
...हम टंकी में टाइम बम फिट कर देते हैं। बम फटेगा! पानी 'नियाग्रा-फॉल' की स्पीड से नीचे झुग्गियों पर गिरेगा। इस तबाही की खबर पाकर सुपर कमांडो ध्रुव इधर आयेगा...
...और उधर हमारी टीम नंबर दो 'हजारा लाल ज्वैलर्स' का स्टील शटर बम से उड़ाकर करोड़ों रुपए के गहने और रत्न उड़ा लाएंगे!
हफ! अबे ध्यान ही बंटाना था, हफ, तो टंकी के नीचे ही बम लगा देता। इतनी ऊपर चढ़ने की क्या जरूरत थी?

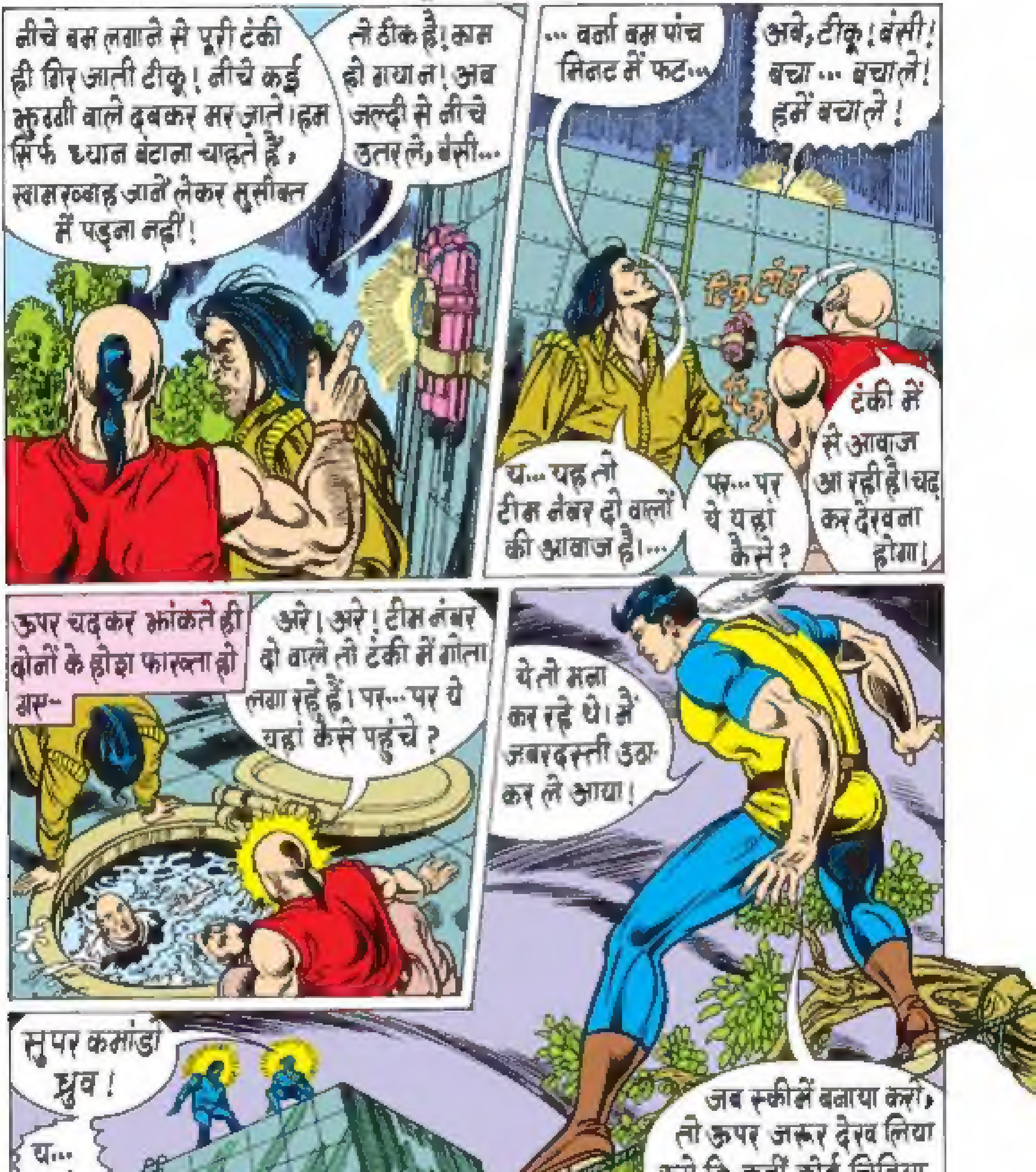

☆ध्रुव कई पशु-पक्षियों से बातें कर सकता है।

ले... लेकिन इनके पास वाला बम कहां है?
तुमने ऊपर आते वक्त शायद ध्यान नहीं दिया...
...वह बम मैंने टंकी की सीढ़ियों पर लगा दिया है। अब कुछ ही सेकंडों बाद वह...
...बम फटेगा, और नीचे जाने का रास्ता टूट जाएगा। पर घबराओ मत! यह टंकी नहीं टूटेगी, क्योंकि मैंने बम की कुछ विस्फोटक चीजें निकालकर उसकी तीव्रता कम कर दी है।
पर... पर... तु... तुम्हारे लगाए बम को फटने में सिर्फ डेढ़ मिनट ही बाकी है...
...नीचे उतर कर बम हटाना होगा!
तब तो मैं तुमको यह बम फेंकने नहीं दूंगा।
जरा इस टंकी के साथ-साथ आज तुमको भी पता चल जाए कि धमाके से जब चिथड़े उड़ते हैं तो कैसा लगता है।

ब... बम फेंक दो! फ... फट जाएगा! हम सब मर जाएंगे!
बहुत डर लगता है मरने से? तब ये डर कहाँ था जब तू टंकी को उड़ाकर पानी से गरीबों के घर तबाह करने जा रहा था?
म... माफ कर दे भाई? माफ कर दे!
ले, मैं खुद ही टंकी में कूद गया!
अ... अब तो बम फेंक दे भाई! अपने साथ-साथ सबको मरवाएगा तू!
लो! मैं बम तुमको ही दे देता हूं!
ईई SSSSS मार डाला रे! मार डाला!
चिल्ला मत! अब ये बम नहीं फटेगा। पानी में भीगकर इसके सर्किट खराब होकर बन्द हो जाएंगे...
...अब तुम लोग पानी में गोता खाओ, जब तक पुलिस आकर तुमको निकाल न ले!

जब ध्रुव, स्टार लाइन की मदद से नीचे उतरा तो नीचे धमाके की आवाज सुनकर झुग्गी वालों की भीड़ पहले ही जमा हो चुकी थी-
ध्रुव भइया की जय होए!
आज तो ध्रुव भइया ने हम गरीबन की झोपड़ियों और बच्चन लोगों को बचाकर बड़ा उपकार किया है।
आप लोग सचमुच मुझे शर्मिन्दा कर रहे हैं। मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया है।...
...जो जय-जयकार के लायक हो!
ध... ध्रुव जी... आ... आपसे मुझे... मुझे...
हां, हां! कहिए! कौन हैं आप? मुझसे क्या चाहती हैं?
म-मैं कैसे कहूं? आप इतने बड़े आदमी हैं, और मैं झुग्गियों की एक मामूली...
सब बेकार बातें हैं। अपने-आप को कभी मामूली नहीं समझना चाहिए। आप कहिए! आपका काम मैं हर कीमत पर पूरा करूंगा।
सच! म... मैं वैशाली हूं। कुछ ही महीने हुए, गांव से राजनगर आई हूं। यहां मेरे रिश्तेदार रहते हैं। मैं पत्रकार बनना चाहती हूं, ताकि मैं इन झुग्गी वालों के अधिकारों के लिए प्रशासन से लड़ सकूं...
...मैंने अभी यहां हुई घटना को अपनी आंखों से देखा है। इस पर मैं रिपोर्ट लिखूंगी। लेकिन अगर आप मुझे इंटरव्यू दें तो...

मैं समझ गया, वैशाली! मेरे इंटरव्यू देने से तुम्हारे आर्टिकल की कीमत काफी बढ़ जाएगी। और कोई भी बड़ा समाचार पत्र तुम्हारे आर्टिकल को छापने को तैयार हो जाएगा।
हां, हां! अगर आप ऐसा कर सकें तो मुझे पत्रकारिता के क्षेत्र में जमने में काफी आसानी हो सकती है!
ठीक है, वैशाली! मैं तुमको ऐसा इंटरव्यू दूंगा, जैसा मैंने आज तक शायद किसी को भी नहीं दिया होगा। तुम्हारे जरिए दुनिया को मैं ध्रुव की कहानी सुनाऊंगा... जो शुरू होगी मेरे जन्म स्थान 'जुपिटर सर्कस' से!
पर मेरी एक शर्त माननी होगी तुम्हें!
श... शर्त! कैसी शर्त?
वह ये कि तुम मुझे 'तुम' बुलाओगी। आप कह कर शर्मिन्दा नहीं करोगी।
हा हा हा! मुझे आपकी... ओ... तुम्हारी शर्त मंजूर है।
इधर ध्रुव जुपिटर सर्कस की यादों को कुरेदने जा रहा था...
...और वहां से दूर- बहुत दूर फ्रांस के एक शहर 'ल्योन' के एक पार्क में भी जुपिटर सर्कस का ही जिक्र छिड़ने जा रहा था-
वह आ रही है, काकातुआ! और दूसरी तरफ से उसका पार्टनर भी आ रहा है।
अब इनके बीच में जो बातें होंगी, वह सुनने से हमारा कुछ भला जरूर होगा।

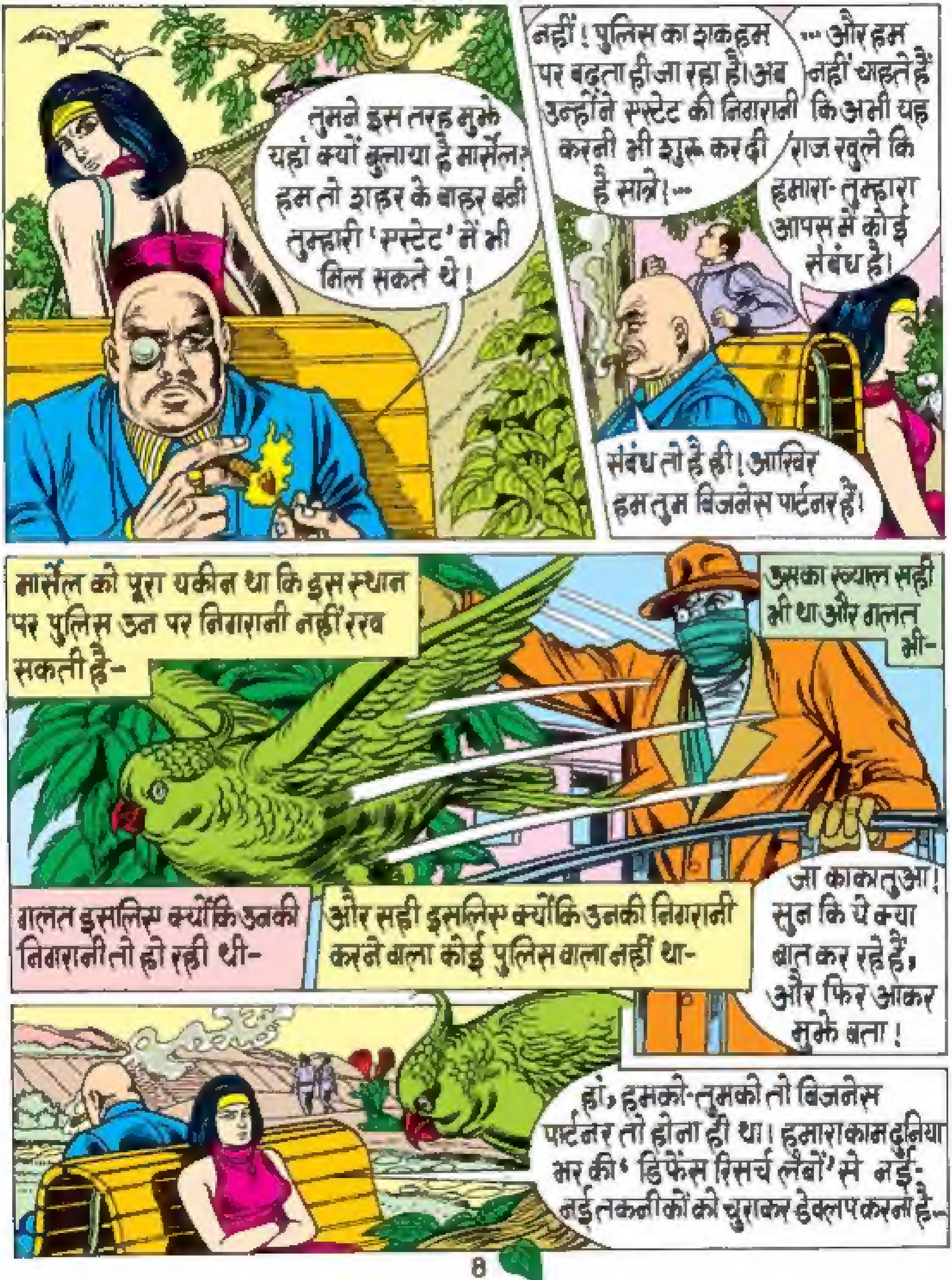
तुमने इस तरह मुझे यहां क्यों बुलाया है मार्सेल? हम तो शहर के बाहर बनी तुम्हारी 'एस्टेट' में भी मिल सकते थे!
नहीं! पुलिस का शक हम पर बढ़ता ही जा रहा है। अब उन्होंने एस्टेट की निगरानी करनी भी शुरू कर दी है साने!...
...और हम नहीं चाहते हैं कि अभी यह राज खुले कि हमारा-तुम्हारा आपस में कोई संबंध है।
संबंध तो है ही! आखिर हम तुम बिजनेस पार्टनर हैं।
मार्सेल को पूरा यकीन था कि इस स्थान पर पुलिस उन पर निगरानी नहीं रख सकती है-
उसका ख्याल सही भी था और गलत भी-
गलत इसलिए क्योंकि उनकी निगरानी तो हो रही थी-
और सही इसलिए क्योंकि उनकी निगरानी करने वाला कोई पुलिस वाला नहीं था-
जा काकातुआ! सुन कि ये क्या बात कर रहे हैं, और फिर आकर मुझे बता!
हां, हमको-तुमको तो बिजनेस पार्टनर तो होना ही था। हमारा काम दुनिया भर की 'डिफेंस रिसर्च लैबों' से नई-नई तकनीकों को चुराकर डेवलप करना है-

...और हमारा काम उस तकनीक से बने नए-नए विध्वंसात्मक हथियारों को चोरी-छिपे पूरी दुनिया में बेचना है। काम की बात करो मार्सेल! जो मैं जानता हूं उसको दोहरा कर मेरा समय मत खराब करो!
तो सुनो! 'जिग्सा' ने तय किया है कि अब हम इस पूरी सम्पत्ति को बेच कर किसी और देश में अपना ऑपरेशन शुरू करेंगे। क्योंकि अब यहां पर पुलिस के दबाव की वजह से काम करना संभव नहीं रहा।
तो फिर बेच दो। तुमलोग जहां रहोगे, मैं वहीं से अपना भी बिजनेस चला लूंगा।
इतना आसान नहीं है। वह मेरा बूढ़ा ससुर, जो इस समय लकवे से अपाहिज पड़ा है, लकवा मारने से पहले वसीयत लिख चुका था।...
...और उसके अनुसार जब तक मेरा देवर रघुवंशी भी 'सेल-डीड' यानी बिक्री के कागज पर दस्तखत न कर दे तब तक ये प्रापर्टी बिक नहीं सकती।
लेकिन... लेकिन रघुवंशी तो पच्चीस साल पहले ही फरार हो चुका है। पुलिस को अभी भी उसकी तलाश है।
तुम्हारी मूर्खता के कारण। तुम्हारे ही आदमी ने उस पर गोली चलाई थी। लेकिन वह सिर्फ घायल होकर रह गया।
गोली तो सिर में लगी थी उसके। लेकिन फिर भी न जाने कैसे वह गायब हो गया...
...वर्ना पुलिस को उसकी लाश ही मिलती।
खैर छोड़ो! इतने सालों की मेहनत के बाद हमने उसको तलाश कर ही लिया है। वह अबसे कुछ साल पहले तक जुपिटर सर्कस में श्याम नाम से काम कर रहा था।
कुछ साल पहले तक? तो अब वह कहां है?
ऊपर! वहीं जहां पर हम उसे भेजना चाहते थे।
तो फिर अब समस्या क्या है?

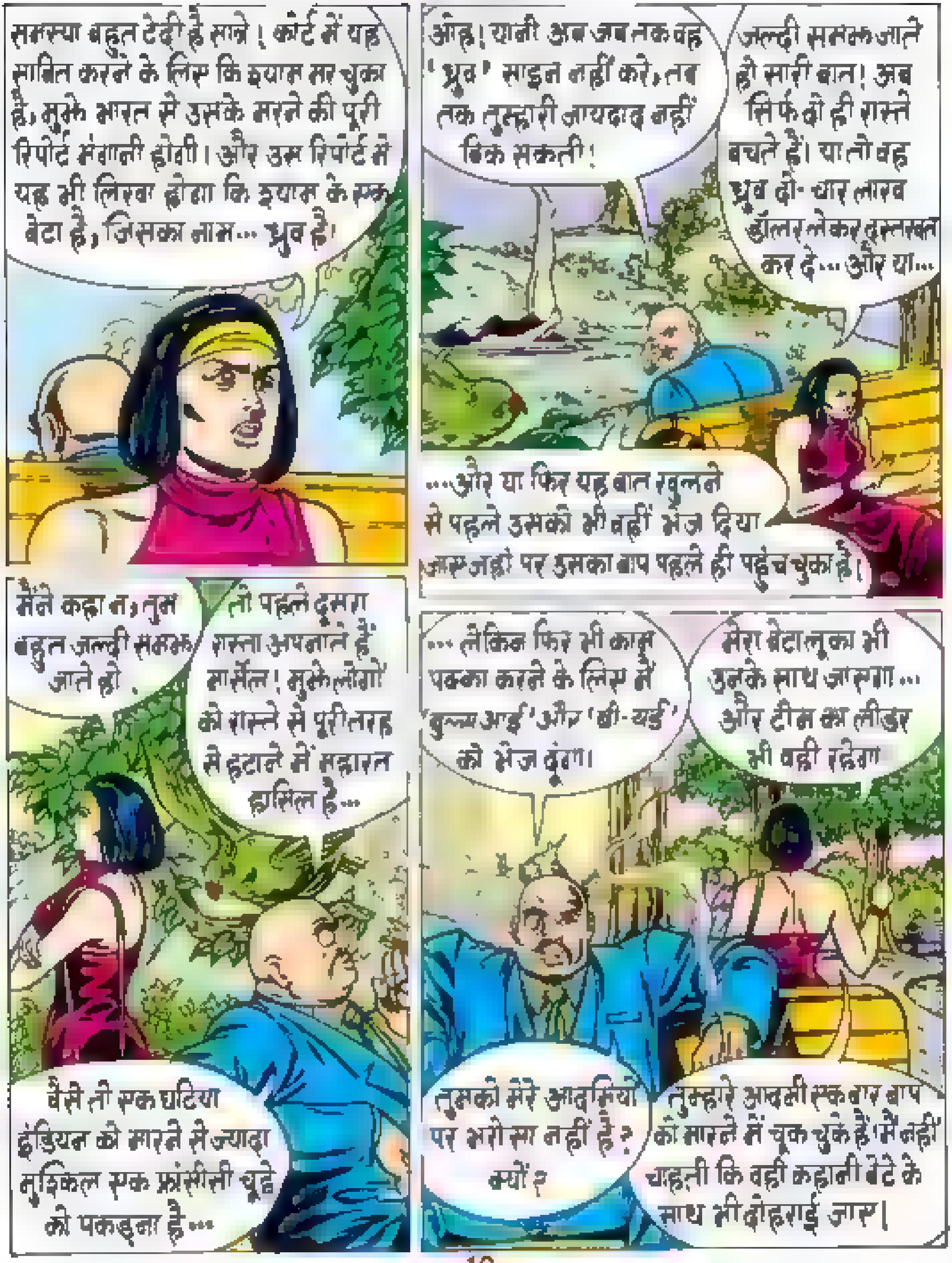
समस्या बहुत टेढ़ी है सान्ते ! कोर्ट में यह साबित करने के लिए कि इयान मर चुका है, मुझे भारत से उसके मरने की पूरी रिपोर्ट मंगानी होगी। और उस रिपोर्ट में यह भी लिखा होगा कि इयान के एक बेटा है, जिसका नाम... ध्रुव है।
ओह! यानी अब जब तक वह 'ध्रुव' साइन नहीं करे, तब तक तुम्हारी जायदाद नहीं बिक सकती!
जल्दी समझ जाते हो सारी बात! अब सिर्फ दो ही रास्ते बचते हैं। या तो वह ध्रुव दो-चार लाख डॉलर लेकर दस्तखत कर दे... और या...
...और या फिर यह बात खुलने से पहले उसको भी वहीं भेज दिया जाए जहाँ पर उसका बाप पहले ही पहुंच चुका है।
मैंने कहा न, तुम बहुत जल्दी समझ जाते हो।
तो पहले दूसरा रास्ता अपनाते हैं मार्सेल! मुझे लोगों को रास्ते से पूरी तरह से हटाने में महारत हासिल है...
वैसे तो एक घटिया इंडियन को मारने से ज्यादा मुश्किल एक फ्रांसीसी चूहे को पकड़ना है...
...लेकिन फिर भी काम पक्का करने के लिए मैं 'एल्फ आई' और 'बी-वई' को भेज दूंगा।
मेरा बेटा लूका भी उनके साथ जाएगा... और टीम का लीडर भी वही रहेगा
तुमको मेरे आदमियों पर भरोसा नहीं है? क्यों?
तुम्हारे आदमी एक बार बाप को मारने में चूक चुके हैं! मैं नहीं चाहती कि वही कहानी बेटे के साथ भी दोहराई जाए।

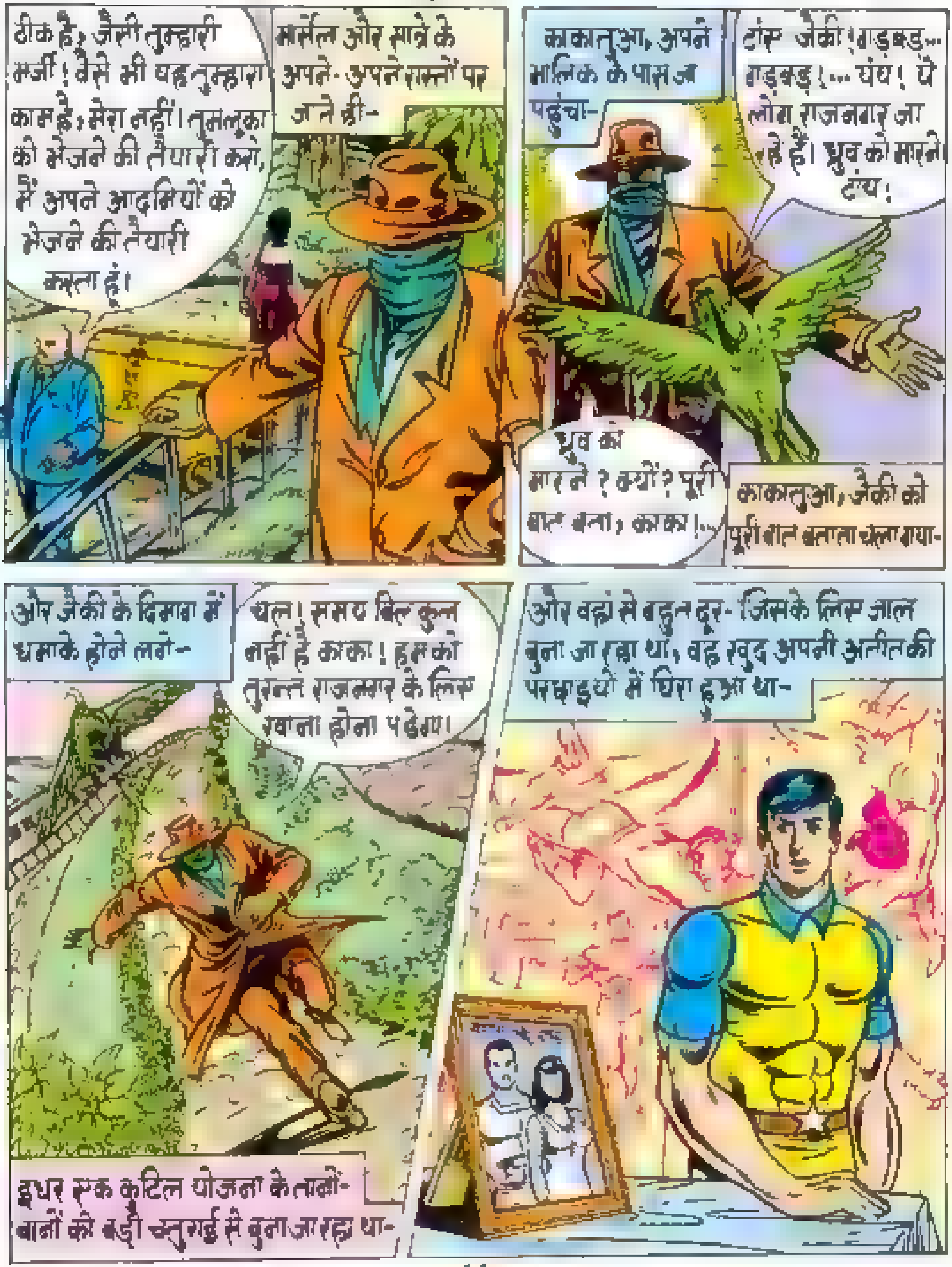
ठीक है, जैसी तुम्हारी मर्जी! वैसे भी यह तुम्हारा काम है, मेरा नहीं। तुम लुका को भेजने की तैयारी करो, मैं अपने आदमियों को भेजने की तैयारी करता हूं।
मार्शल और सात्रे के अपने-अपने रास्तों पर जाते ही-
काकातुआ, अपने मालिक के पास जा पहुंचा-
टांय जेकी! गड़बड़... गड़बड़!... टांय! ये लोग राजनगर जा रहे हैं। ध्रुव को मारने टांय!
ध्रुव को मारने? क्यों? पूरी बात बता, काका!...
काकातुआ, जैकी को पूरी बात बताता चला गया-
और जैकी के दिमाग में धमाके होने लगे-
चल! समय बिल्कुल नहीं है काका! हम को तुरन्त राजनगर के लिए रवाना होना पड़ेगा।
और वहां से बहुत दूर- जिसके लिए जाल बुना जा रहा था, वह खुद अपनी अतीत की परछाइयों में घिरा हुआ था-
इधर एक कुटिल योजना के तानों-बानों को बड़ी चतुराई से बुना जा रहा था-

क्या बात है मम्मी? भइया आज इतना चुपचुप और उदास क्यों है? आज तो मेरी उसको छेड़ने की हिम्मत भी नहीं पड़ रही है। ऐसा क्या हो गया आज?
आज का दिन तू नहीं जानती श्वेता। क्योंकि आज से पहले हर साल इस समय तू स्कूल में होती थी। इसी लिए तूने ध्रुव का यह रूप कभी नहीं देखा।
लेकिन आज है क्या?
आज ध्रुव के माता-पिता की बरसी है बेटा! आज के ही दिन जुपिटर सर्कस आग की लपटों में स्वाहा हो गया था। और साथ ही साथ भस्म हो गए थे ध्रुव के माता-पिता राधा और श्याम।
ध्रुव तो अपने माता-पिता का क्रियाकर्म भी नहीं कर पाया था। क्योंकि वहां पर मरे हुओं की पहचान कर पाना असंभव था!
ओह! तो ये है भइया के दुःख का कारण!...
...तब तो मैं, तुम और पापा हम सब अपने काम में फेल हो गए मम्मी!...
...हमारा प्यार भइया को उसका दुःख भुला नहीं सका।
अगर मैं अपनी जान देकर भी भइया का दुःख दूर कर पाती तो जान भी दे देती।
श्वेता! खबरदार जो तूने आइन्दा ऐसी बात कभी सोची भी तो!...

...भाई तो बहनों पर अपनी जान न्योछावर करते हैं। बहनों की आड़ में छुपकर अपनी जान बचाते नहीं।
तो फिर तुम ही बताओ कि मैं ऐसा क्या करूं जिससे कि तुम अपना दुःख भूल सको! अगर तुम नहीं हंसोगे तो मैं कैसे हंस सकती हूं?
तुम्हें कुछ करने की जरूरत नहीं श्वेता! अरे इस घर में जो मुझे मिला है, वह तो इन्द्र को स्वर्ग में भी नहीं मिल सकता।...
...भगवान ने एक हाथ से मेरी खुशियां छीनीं, तो दो हाथों से वापस कर दीं। पर इन यादों का क्या करूं? जो अनचाहे ही दिलो-दिमाग में घुसती चली आती हैं।
श्वेता तो बच्ची है। ध्रुव! दिल का ज्यादा इस्तेमाल करती है, और दिमाग का कम...
...लेकिन मैंने और पापा ने तो तुमको हमेशा यही सिखाया है कि अपने माता-पिता को कभी मत भूलना। यही उनके प्रति तुम्हारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। पर जब भी उनको याद करो तो गर्व के साथ। उदास होकर नहीं!
गलती हो गई मम्मी!
कान पकड़ता हूं।
हां! मम्मियां तो होती ही हैं माफी देने के लिए...
...और बेटे होते ही हैं परेशान करने के लिए! बोलो, सुबह से सबको परेशान क्यों कर रहे हो?
आऊफ! अच्छा बाबा, आज तू भी मुझको पीट लेना, पर बाद में। अभी किसी का फोन आ रहा है...

इस घंटी से ध्रुव की जिन्दगी में एक तूफान सा उठने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी—
हैलो! ध्रुव हियर!
ओहो! ध्रुव! मुझे तुमसे ही बात करनी थी। और चांस की बात देखो फोन तुमने ही उठाया। तुम्हारी बहन, मां या पिता ने नहीं।
ओह! यानी आपको मेरे परिवार के बारे में पूरी जानकारी है। कौन हैं आप?
यह तो समझाने वाली बात है, जो फोन पर समझानी जरा मुश्किल है...
—फिलहाल तो मैं पेरिस से आया हूं। काफी खोजबीन के बाद तुम्हारा पता ढूंढा है...
...मैं यहां पर तुम्हारे पिता रघुवंशी से मिलने आया था। हम दोनों पेरिस में साथ ही थे...
...यहां आकर पता चला कि वह नहीं रहा।...
...इसीलिए तुमसे मिलकर उसकी मौत का अफसोस जाहिर करना चाहता हूं।
आपने या तो गलत नम्बर मिलाया है और या फिर नशा किया हुआ है। क्योंकि मेरे पिता का नाम रघुवंशी नहीं था, और जहां तक मैं जानता हूं वह भारत से बाहर कभी नहीं गए।
...और आज से पच्चीस साल पहले वह फ्रांस से फरार हो गया था।
प...पर क्यों?
तुम जो कुछ जानते हो वह तुम्हारे पैदा होने के बाद की बात है। मैं उससे पहले की बात कर रहा हूं... तुम जिसको श्याम नाम से जानते हो उसका नाम रघुवंशी था...
सारी बातें फोन पर नहीं हो सकतीं बच्चे! आकर मिलो तो आराम से बातें होंगी। मैं बताता हूं कि तुमको कहां आना है। पर अकेले आना!—
...क्योंकि मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे बाप के बारे में कोई और भी जाने और तुम्हारा सिर शर्म से नीचा हो जाए।

अब सुनो कि तुमको कब और कहां पर आना है।
इधर शिकारी शिकार करने के लिए तैयार हो रहा था...
...और पास में ही शिकारी का शिकार करने की तैयारी हो रही थी–
शाबाश काका! तुम सही समय पर राजनगर पहुंच भी गए और तेरी इन षड्यंत्रकारियों को ढूंढने की मेहनत भी सफल हो गई।
लेकिन अब मामला जरा टेढ़ा हो रहा है...
... यह गंजा जो फोन कर रहा है जरूर लूका ही होगा क्योंकि बाकी दोनों को हम ट्यून में देख ही चुके हैं...
...और यह फोन भी ध्रुव को ही कर रहा है। क्योंकि यहां पर यह किसको फोन करेगा? मेरी छठी इन्द्रिय कह रही है कि इसको किंग की जरूरत पड़ सकती है...
... तुम इन पर नजर रखो। मैं किंग को लेकर आता हूं।
उधर- ध्रुव के दिमाग में विचारों की आंधियां चल रही थीं–
क्या हुआ ध्रुव? किसका फोन था? कौन था जो तुम्हारे पिता का नाम रघुवंशी बता रहा था?
यह तो मुझे भी पता करना है मम्मी! मुझे आभास हो रहा है कि मुझे बदनाम करने के लिए षड्यंत्र रचाया जा रहा है–
...लेकिन मैं कुछ होने से पहले ही इनको बेनकाब कर दूंगा।

कहानी 19 वें पृष्ठ से आगे

पीटर, तुम यह क्या ले आए?
तुम्हारे लिए एक 'सरप्राइज गिफ्ट' है। कमांडो फोर्स के मिले-जुले प्रयासों का नतीजा!
आखिर ये है क्या?...
...ओह, बेल्ट! काफी खूबसूरत बेल्ट है।
सिर्फ खूबसूरत ही नहीं, काफी काम की भी है यह बेल्ट! इसकी चमड़ों की तह के बीच में लचकदार फाइबर ग्लास की लाइनिंग है...
...तुम्हारी पुरानी बेल्ट में सिर्फ 'स्टार ब्लेड' और 'स्टार लाइन' रखने की जगह है। और वह भी थोड़ी सी।
जबकि इस बेल्ट में बारह से भी ज्यादा 'पाऊच' है। और वह भी एयर टाइट और वाटर प्रूफ।...
...इसमें तुम्हारे 'स्टार-ब्लेड' और 'स्टार लाइन' के साथ और भी ऐसी कई चीजें रखी हैं, जो वक्त पर तुम्हारे काम आ सकती हैं।...
...इसमें 'नर्व कैप्सूलों' के साथ-साथ शॉर्ट 'सिग्नल प्लेयर' फ्लैश बम और कुछ जीवनदायी दवाइयां भी हैं। यहां तक कि इसमें 'फर्स्ट-एड का सामान भी है।
वंडर फुल! तुम लोगों की इस 'गिफ्ट' ने मेरी ताकत और उत्साह को सौ गुना बढ़ा दिया है...
...और मुझे आभास हो रहा है कि यह बेल्ट जल्दी ही मेरे काम आने वाली है।
अब समय नहीं है। मुझे जल्दी से जल्दी वहां पहुंचना होगा।

जहां पर उस रहस्यमय फोन करने वाले ने मुझे बुलाया था। राजनगर के नवीनतम टूरिस्ट आकर्षण 'आर्टिफिशियल वॉटर फॉल' पर। बुलाने वाले ने मेरी जगह क्यों चुनी है? ...
... इस वक्त तो यह जगह एकदम सुनसान होगी। क्योंकि शाम पांच बजे के बाद इस 'वॉटर फॉल' को दर्शकों के लिए बन्द कर दिया जाता है। ...
...यानी यह व्यक्ति जो भी है मुझसे एकदम अकेले में बात करना चाहता है। पता नहीं मेरी भलाई के लिए या मेरी बुराई के लिए।
वेलकम, ध्रुव! मुझे पता था कि तुम जरूर आओगे। और अकेले आओगे।
और मैं आ गया... अब बताइए कि आप कौन हैं और मेरे पिता और मेरे वंश पर कीचड़ क्यों उछाल रहे हैं?
तुम्हारे वंश पर कीचड़ उछालना तो अपने-आप पर कीचड़ उछालने जैसा है, पर क्या करूं। सच्चाई तो सच्चाई है। और सच्चाई जानना चाहते हो तो सुनो...

लेकिन कोई यह नहीं चाहता था कि ध्रुव कोई भी बात सुने-
लूका, नकाब पहनकर ध्रुव को बातों में उलझा रहा है ताकि उस पर पीछे से वार किया जा सके।
शायद वह भी जानता है कि ध्रुव पर वार करना बच्चों का खेल नहीं है।...
...लेकिन मैं इसके प्लान को सफल नहीं होने दूंगा। फिर अपना काम शुरू कर दे।
और अगले ही पल-
अरे! ऊपर से चट्टानें लुढ़क रही हैं...
...यानी ऊपर कोई और भी है।
मतलब धोखा! ध्रुव किसी और को साथ लेकर आया है। इसको शायद हमारे इरादों का आभास हो गया था।...
...बुल्स आई! आ जाओ!
ओह! यानी इतनी मेहनत मुझे मारने के लिए की गई थी? लेकिन मुझे मारना तुम जैसों के बस की बात नहीं है, मिस्टर नकाबपोश!
लेकिन ऊपर से पत्थर कौन लुढ़का रहा है. मैं साथ तो कोई भी नहीं आया।
यह 'बुल्स आई' है ध्रुव, मामूली आदमी का हत्यारा नहीं। इसमें एक पूरी बटालियन से मुकाबला कर सकने की शक्ति है...
...इसकी एक आँख की जगह इन्फ्रा रेड टेलिस्कोप फिट है। और दूसरी आँख की जगह मिनी रायफल।
और एक 'टेलिस्कोपिक आई' इसके पीछे भी लगी है। ताकि यह एक ही समय में हर तरफ नजर रख सके...

और इतना तो तुम भी समझते ही होगे कि हाथ का निशाना तो एक बार चूक सकता है...
...पर आँख का निशाना कभी नहीं चूकता।
हे भगवान! यह तो सचमुच बहुत खतरनाक हथियार से लैस है...
मेरा आदेश याद रखना बुल! निशाना इस पर नहीं, इसके आस-पास लगाओ। इसको जलप्रपात में धकेलने की कोशिश करो।...
...हमारी स्कीम के लिए यह बहुत जरूरी है कि इसकी मौत एक हादसा लगे, हत्या नहीं।
और इससे पहले कि ध्रुव लूका की चाल को भांप पाता-
इसके पैरों के नीचे का प्लेटफार्म चकनाचूर हो गया-
लेकिन गिरते ही ध्रुव के दिमाग ने काम करना शुरू कर दिया था-
स्टार लाइन बेल्ट से निकलकर उसके हाथ में आ चुकी थी-
और एक जोरदार झटके से 'स्टार लाइन' चट्टानों की तरफ उछल गई-

अगले ही पल- ध्रुव का नीचे गिरता हुआ बदन हवा में ही रुक गया-
कमाल का लड़का है। सामने दिखती मौत को भी टाल दिया।
उसके होशो- हवास गुम हो गए-
और साथ ही साथ लूका के भी-
य... यह गुरिल्ला कहां से आ गया?...
...के... क्या ध्रुव इसी को लेकर आया था?
लेकिन सिर्फ कुछ पलों के लिए। मेरी अगली गोली इस रस्सी के ही चिथड़े उड़ा देगी।
लेकिन इससे पहले कि चल सकी लूका की गोली...
नहीं लूका! इसको मैं लेकर आया हूं। तुम्हारा खेल खत्म करने के लिए।
लूका? तुम मुझे कैसे जानते हो? ओह! याद आया। मैंने तो तुमको प्रेस में देखा था...
... अपनी एस्टेट के आस-पास चक्कर काटते हुए।

तुम यहां तक भी पहुंच गए? यानी तुम मेरा पीछा कर रहे हो. पर क्यों? मेरी तुमसे क्या दुश्मनी है? मैं तो तुम्हें जानता तक नहीं।
लेकिन तुम ध्रुव को नुकसान पहुंचाना तो चाहते हो न? तुम ध्रुव को खत्म करने का इरादा छोड़ दो, मैं तुम्हारा पीछा करना छोड़ दूंगा नूका।
ओह! यानी तुम हमारे बारे में काफी कुछ जानते हो। और यह हमारे लिए काफी खतरनाक हो सकता है। और अगर तुम समझते हो कि यह गुरिल्ला मुझे रोक सकता है तो यह तुम्हारी भूल है। देखो! यह कैप्सूल।
इसमें भरा 'हाई पॉवर स्टेरायड' मुझे तुरन्त 'सुपर पॉवर' दे सकता है और तब मेरी शक्ति इस गुरिल्ले के बराबर ही हो जाएगी।
तब तो मुझे भी इस लड़ाई में कूदना...
टांय... टांय... जैकी, ध्रुव लगभग ऊपर तक आ चुका है।
ओह, तब तो यहां रुकना ठीक नहीं है। अभी मैं उसके सामने आना नहीं चाहता...
...क्योंकि अगर मैं उसके सामने पड़ गया तो मुझे अपना रहस्य खोलना पड़ सकता है। और यह मैं बिल्कुल नहीं चाहता।

ध्रुव के ऊपर पहुंचने तक 'जैकी' चट्टानों में गायब हो चुका था–
य... यह क्या? यह गुरिल्ला कहां से आ गया? खैर, जो भी हो। यह मेरी मदद ही कर रहा है!
लेकिन वह 'बुल्स आई' कहां चला गया?
मैं इधर हूं बच्चे! इस गुरिल्ले ने मुझ पर अचानक हमला करके मुझे कुछ देर के लिए बेहोश कर दिया था लेकिन अब मैं तुझे परलोक पहुंचाने के लिए होश में आ गया हूं।
ओह! इस गुरिल्ले को नकाबपोश के बजाए इस 'बुल्स आई' पर हमला करना चाहिए था। क्योंकि यह ज्यादा खतरनाक है।...
...खैर, अब मुझे ही इस पर काबू पाने का कोई तरीका सोचना होगा!
ओह! तू उछल-उछलकर मेरी कीमती गोलियों को बरबाद कर रहा है अब मुझे परिस्थिति को अपनी शक्तियों के अनुसार बदलना होगा–

... इन रोशनी उगलती सर्च लाइटों को तोड़कर। क्योंकि तू अंधेरे में तब मुझे नहीं देख पायेगा—
... लेकिन मैं अपनी 'इन्फ्रा-रेड नाइट विज़न' की मदद से तुझे अंधेरे में भी देख लूंगा। तब देखूंगा कि तू बच कर कहां जायेगा?
इधर लूका और किंग में अंधेरे में ही घमासान युद्ध चल रहा था—
जो दोनों को ही थकान के कगार पर लिए आ रहा था—
और दूसरी तरफ ध्रुव अपनी उस जान को बचाने की कोशिश कर रहा था जो किसी भी वक्त परलोक के लिए रवाना हो सकती थी—
ओह! अब दिक्कत यह है कि इसकी पोजीशन मुझे तभी मालूम हो पा रही है, जब यह मुझ पर वार करता है। और उस वक्त मैं बचने में व्यस्त रहता हूं।—

... लेकिन यह मुझको 'नाइट विज़न' की मदद से लगातार देख सकता है. इसे इसका ध्यान बंटाना होगा... ताकि मुझे इस पर वार करने का मौका मिल सके!... और इसका ध्यान बंटाने का एक ग्रेट आइडिया मेरे दिमाग में आ रहा है...
... अंधेरे में गायब हो गया—
अरे! कहां गया वह लड़का? भाग गया क्या? पर मुझे तो बताया गया था कि ध्रुव कभी पीठ दिखाकर नहीं भागता... नहीं... वह भागा नहीं है। वह यहीं कहीं छिपा है।
'बुल्स आई' की नाइट विज़न अगले एक मिनट तक ध्रुव को अंधेरे में तलाश करती रही—
अगले ही पल- ध्रुव का शरीर एक तरफ लपक कर...
अगले ही पल एक गोली ने ध्रुव के 'शरीर' के चिथड़े उड़ा दिए—
अब इसकी मौत हादसा लगे या न लगे, मैं तो इसे मार ही दूंगा।
और उससे अगले पल में—'बुल्स आई' की एक 'आंख' पत्थर की बलि चढ़ गई—
और उसका जुटे रहना आखिरकार सफल हो ही गया—
मैं इधर हूं! 'सांड की आंख'
वो रहा!
आह!
मेरी ऑटोमेटिक रायफल आई!

किसने की मुझ पर वार करने की जुर्रत? ...तुम? ध्रुव!... पर मैंने तो अभी-अभी...
मेरे आदमकद 'कटआऊट' को तोड़ा है, जो तुमको सिर्फ एक आंख से देखने की वजह से ही आयामों के बजाय तीन आयामी लग रहा था।... और जिसे मैं अभी-अभी नीचे से उठाकर लाया था।
तो तू समझ रहा है कि तूने मेरी 'गॉगल आई' को तोड़कर मुझे बेबस कर दिया है?...
...लेकिन ये तेरी भूल है। क्योंकि मेरी 'टेलिस्कोपिक आई' अंधेरे में देखने के साथ-साथ तीव्र विकिरण भी छोड़ सकती है।...
...और यह विकिरण तुझे तीस सेकंड के अंदर-अंदर मार सकता है।
मैं जानता हूं कि तुम अभी आधे बेबस हुए हो। इसीलिए मेरा तुमको अब पूरा बेबस करने का इरादा है।...
...अब जिस 'नाइट विजन' को तुम अपनी ताकत समझ रहे हो वही तुम्हारी दुश्मन बन जाएगी!...
...क्योंकि अब ये 'फ्लैश बम' फटेगा तो हल्की रोशनी में देख रही तुम्हारी आंख पर सामान्य से कई गुना ज्यादा असर करेगा.
आऽऽऽह! मेरी आंख!...
इस चमक ने मुझे अंधा सा कर दिया है!
कड़ाक

और अब मैं तुमको अंधे के साथ-साथ बेहोश भी कर दूंगा।...
तड़ाक
...अब इसको अपने साथ ले जाकर आराम से पूछताछ की जा सकती है... लेकिन इसको ले जाने के लिए मुझे मदद चाहिए।...
...मुझे 'सिग्नल-फ्लेयर' की मदद लेनी होगी। क्योंकि मेरी इस नई बेल्ट में ट्रांसमीटर फिट नहीं हुआ है।
इसको देखकर कोई न कोई तो यहां तक पहुंच ही जाएगा।
'सिग्नल-फ्लेयर' ने अंधेरे को फिर से रोशनी से भर दिया- और ध्रुव को नजर आ गया नीचे झांकता हुआ जैकी-
वैसे भी गुरिल्ला और नकाबपोश अभी तक आपस में उलझे हुए हैं।
इस लड़ाई का फैसला होने तक तो मुझे रुकना ही होगा।
अरे! ऊपर कोई खड़ा हुआ है! यह कहीं इनका ही साथी तो नहीं है जो इन पर नजर रखने को आया हो?
अभी इसको पकड़कर सच्चाई का पता लगा लेता हूं।
ध्रुव, ऊपर की तरफ लपका-

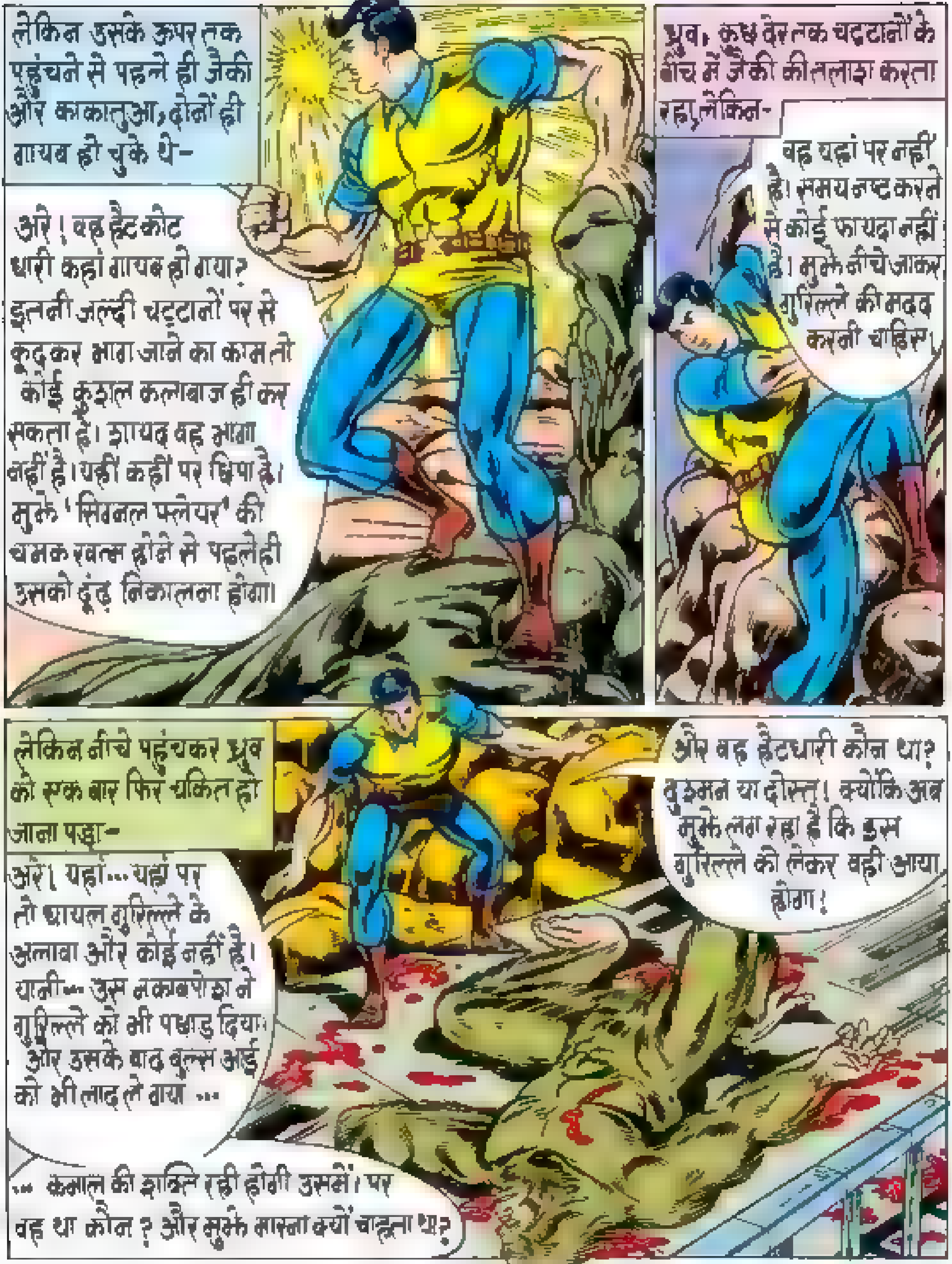
लेकिन उसके ऊपर तक पहुंचने से पहले ही जैकी और काकातुआ, दोनों ही गायब हो चुके थे-
अरे! वह हैटकोट धारी कहां गायब हो गया? इतनी जल्दी चट्टानों पर से कूदकर भाग जाने का काम तो कोई कुशल कलाबाज ही कर सकता है। शायद वह भागा नहीं है। यहीं कहीं पर छिपा है। मुझे 'सिग्नल फ्लेयर' की चमक खत्म होने से पहले ही उसको ढूंढ निकालना होगा।
ध्रुव, कुछ देर तक चट्टानों के बीच में जैकी की तलाश करता रहा, लेकिन-
वह यहां पर नहीं है। समय नष्ट करने से कोई फायदा नहीं है। मुझे नीचे जाकर गुरिल्ले की मदद करनी चाहिए।
लेकिन नीचे पहुंचकर ध्रुव को एक बार फिर चकित हो जाना पड़ा-
अरे! यहां... यहां पर तो घायल गुरिल्ले के अलावा और कोई नहीं है। यानी... उस नकाबपोश ने गुरिल्ले को भी पछाड़ दिया। और उसके बाद बुल्स आई को भी लाद ले गया ...
... कमाल की शक्ति रही होगी उसमें। पर वह था कौन? और मुझे मारना क्यों चाहता था?
और वह हैटधारी कौन था? दुश्मन या दोस्त। क्योंकि अब मुझे लग रहा है कि इस गुरिल्ले को लेकर वही आया होगा!

और न जाने क्यों यह गुरिल्ला भी मुझे कुछ पहचाना हुआ सा लग रहा है... कहानी कुछ उलझती हुई सी लग रही है...
...एक तरफ मारने वाले हैं और एक तरफ शायद बचाने वाला। और दोनों के ही बारे में मैं कुछ नहीं जानता।
थोड़ी ही देर बाद उस सुनसान जगह पर भीड़ सी जमा हो गई थी—
लगता है जैसे इसकी किसी ट्रक से टक्कर हुई हो ध्रुव... इसको तो जानवरों के नहीं आदमियों के अस्पताल में भेजना होगा।
डिग के जाने के बाद—
यहां के दोनों चौकीदारों को हमने ढूंढ निकाला है ध्रुव। दोनों ही नीचे बने गार्ड्स रूम में बंद पड़े थे।
लेकिन ये दोनों थे कौन? तुमको यहां बुलाकर मारना क्यों चाहते थे?
कुछ पता नहीं इंस्पेक्टर! क्योंकि न तो मैं उनको पकड़ पाया और न ही उनकी सूरतें देख पाया।
खैर। रिपोर्ट तो मैं दर्ज कर लूंगा। तुम कभी भी आकर आवश्यक खानापूरी कर देना।
ठीक है इंस्पेक्टर।
एंड थैंक्यू।
वापस लौटते समय ध्रुव के दिमाग में विचारों की आंधियां चल रही थीं—
वे दोनों शक्ल और बोली के लहज़े से विदेशी लग रहे थे... क्या सचमुच उनकी बात में कोई सच्चाई है?

मेरे स्वर्गीय पिता श्याम ने कभी भी मुझसे अपनी पिछली जिन्दगी का जिक्र नहीं किया और न ही मैंने कभी इस बात पर गौर किया। अब जुपिटर सर्कस का कोई कलाकार जीवित भी तो नहीं बचा है, जिससे मैं इस बात को पूछ सकूं!...
...अब मेरी एकमात्र उम्मीद करीम बचा है! शायद वही इस गुत्थी को सुलझा सके...
कमांडो हेडक्वार्टर जाकर देखता हूं!
और फिर-
कुछ बात बनी करीम?
हां, कैप्टेन! अभी-अभी बनी है। पच्चीस साल पुरानी अन्तर्राष्ट्रीय अपराधियों की फाइल में इनफार्मेशन मिली है। देखो! यह रही रघुवंशी की फोटो!
ध्रुव ने फोटो पर नजर डाली और सीने के पिंजरे की सलाखों से उसका दिल धाड़-धाड़ टकराने लगा-
यह फोटो!... हालांकि काफी पुरानी फोटो है, फिर भी या तो यह पिताजी की फोटो है और या फिर उनके किसी जुड़वां हमशक्ल की।
बैकग्राउंड में दिख रही एफिल टॉवर से यह भी साफ जाहिर है कि फोटो पेरिस में ही खींची गई थी!...
... लेकिन यह कैसे साबित होगा कि यह फोटो मेरे पिता श्याम की ही है? उनके किसी हमशक्ल की नहीं!
किस सोच में पड़ गए कैप्टेन? किसकी फोटो है ये?
हूम! कोई खास नहीं, इसकी 'क्राइम फाइल' कहां है?
नो फाइल कैप्टेन! यह इंटरपोल की सूचना है।
इसके साथ सिर्फ कुछ 'पहचान चिन्ह' हैं और कुछ नहीं!

हां! इतना जरूर पता है कि रघुवंशी पर एक नृशंस हत्या का आरोप है। विस्तृत जानकारी मंगाने के लिए तुमको अपने पापा कमिश्नर राजन के पास जाना पड़ेगा...
...उनके लिखित अनुरोध के बगैर इंटरपोल और कोई जानकारी नहीं देगा।
ध्रुव के लिए यह नई मुसीबत खड़ी हो रही थी-
क्योंकि-
पापा से जानकारी मंगाने के लिए कहूं तो कैसे? क्योंकि पापा यह जरूर पूछेंगे कि मुझे यह जानकारी क्यों चाहिए? कौन है रघुवंशी? और फिर मैं झूठ नहीं बोल पाऊंगा!
यह जानने के लिए कोई और रास्ता निकालना पड़ेगा कि दयाल और रघुवंशी दो अलग-अलग व्यक्ति हैं या एक ही व्यक्ति के दो अलग-अलग नाम!
ध्रुव न चाहते हुए भी एक जाल में जकड़ा जा रहा था-
ध्रुव!
पापा! आप अभी तक जाग रहे हैं?
हां! मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था। लाल चौक थाने के इंस्पेक्टर ने बताया कि उसने तुम्हारी तरफ से एक रिपोर्ट दर्ज की है।...
...'आर्टीफीशियल वाटर-फाल' पर कुछ लोगों ने तुम्हारी जान लेने की कोशिश की...

..और तुम्हारी मम्मी मुझे बता रही थी कि सुबह किसी का फोन आया था... तुम्हारे पिता का नाम श्याम नहीं, कुछ और बता रहा था! शायद उसी ने तुमको जलप्रपात पर बुलाया था।
हां, पापा! लेकिन मामला सुलझने के बजाय और उलझ ही गया! पता नहीं क्या सच है और क्या झूठ?
किस सच और झूठ की बात कर रहे हो तुम?
कुछ नहीं पापा! यूं ही!
गुडनाइट पापा!
?
राजन मेहरा की भवें सिकुड़ती चली गईं! ध्रुव उनके सवाल को बड़ी सफाई से टाल गया था। आज पहली बार ध्रुव ने राजन मेहरा से किसी बात को छिपाया था–
उस रात ध्रुव की आंखों में तो नींद नहीं थी–
लेकिन राजनगर में ही किसी और स्थान पर कई और आंखें भी जाग रही थीं–
आज रात को ध्रुव खत्म हो जाता और हमारा काम पूरा हो जाता! लेकिन उस जले चेहरे वाले ने हमारा काम बिगाड़ दिया!
लेकिन वह था कौन लूका? गुरिल्ला साथ में लेकर कम से कम आम आदमी तो नहीं घूमते!...
...और फिर उसका इस मामले में क्या संबंध है?

यह तो मुझे भी नहीं पता, बी- थर्ड ! लेकिन इतना जरूर जानता हूं कि उस आदमी की वजह से मैं ध्रुव को नहीं मार सका !...
...उस गुरिल्ले से हुई लड़ाई से अगर मैं बुरी तरह से थक न गया होता तो 'बुल आई' को लादकर लाने के बजाय मैं ध्रुव को दो टुकड़ों में चीर रहा होता।
तब तो वह आदमी शायद हमारे बारे में काफी कुछ जानकारी रखता है। इसीलिए मेरा सुझाव तो यह है कि पहले उस जले चेहरे वाले को खत्म किया जाए। कहीं वह ध्रुव को सब कुछ बता न दे !
इस ख्याल से तो पहले मुझे भी डर लगा था...
...लेकिन बाद में मुझे पता चला कि न जाने क्यों वह आदमी खुद भी ध्रुव के सामने आना नहीं चाहता !
तब तो काम बन गया ! उसका गुरिल्ला 'सिटी-हॉस्पीटल' में भर्ती है। वह उस गुरिल्ले को देखने वहां पर जरूर जाएगा। और वहीं पर हम उसका काम तमाम कर देंगे !
ठीक है। जब तक यह काम पूरा नहीं हो जाता, तब तक हम ध्रुव को मारने का कार्यक्रम स्थगित कर देते हैं।
खतरा ध्रुव के सिर से हटकर कहीं और मंडराने लगा था-
अगले दिन सुबह-
मेरे सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि मेरे पास मेरे पिता श्याम के न तो उंगलियों के निशान हैं और न ही कोई और पहचान चिन्ह, जिसकी मदद से मैं 'रघुवंशी' के पहचान चिन्हों से उनका मिलान कर सकूं।

भइया! तुमसे कोई वैशाली नाम की लड़की मिलने आई है।
वैशाली! वह रिपोर्टर! बैठाओ उसको, श्वेता! मैं अभी आता हूं।
कुछ ही देर बाद-
कहो वैशाली! कैसे आना हुआ?
आप... मेरा मतलब... तुम्हारा धन्यवाद अदा करना था ध्रुव! मेरा पानी की टंकी वाला आर्टिकल छप गया!
वेरी गुड!
अब तो तुम्हारा रिपोर्टर बनने का रास्ता खुल गया।
हां! तुमको याद है मैं तुम पर भी एक आर्टिकल लिख रही थी!
हां! ताकि समाज का हर वर्ग मेरी जिन्दगी से कुछ प्रेरणा ले सके! पता नहीं लेगा या नहीं?
जरूर लेगा! शुरुआत मैंने जुपिटर सर्कस से की है। बड़ी मुश्किल से ढूंढ-ढूंढकर कुछ जानकारियां जुटाई हैं।...
...पता है? इस चक्कर में मैं कहां-कहां घूमी? मैंने सोचा कि जुपिटर सर्कस के कलाकारों को अगर मेडिकल प्रॉब्लम्स होती होंगी तो वे उस एरिया के डॉक्टर के पास जरूर जाते होंगे...
...बस! मैंने डॉक्टरों के चक्कर काटने शुरू कर दिए। एक दांतों के डॉक्टर से पता चला कि एक बार श्याम नाम का कलाबाज अपना दांत दिखाने आया था!
उसने मुझे श्याम यानी तुम्हारे पिता के 'डेंटल प्रिंट' यानी दांतों की छाप भी दी। पर उससे मेरा क्या काम बनता। फोटो होती तो कुछ बात भी थी। अगर तुम्हारे पिता या जुपिटर सर्कस की कोई भी फोटो होती तो...
डेंटल प्रिंट! तुम्हारे पास इस वक्त वे प्रिंट हैं या नहीं?
हैं तो! पर उसका तुम क्या करोगे?

लो! ये रहे वे प्रिन्ट।
थैंक्यू वैशाली! अभी मुझे कुछ बहुत जरूरी काम है। तुमसे मैं बाद में मिलूंगा।
कमांडो हेडक्वार्टर की तरफ बढ़ते हुए ध्रुव का दिमाग बहुत तेजी से काम कर रहा था-
बड़ी किस्मत से यह सबूत हाथ लगा है। जैसे किसी आदमी के 'फिंगर प्रिंट्स' का मिलान करके उसको ढूंढ निकाला जा सकता है वैसे ही 'डेंटल प्रिंट्स' का मिलान करके भी उसको पकड़ा जा सकता है! क्योंकि हर व्यक्ति के दांतों के निशान भी अलग-अलग होते हैं।
और फिर- आखिरकार वह बम फट ही गया, जो इतनी देर से सिर्फ सुलग रहा था-
क्या पता चला करीम?
एकदम परफेक्ट मैच है ध्रुव! किसके हैं यह दांतों के निशान? और तुमको कहां से मिले?
ध्रुव कोई जवाब न दे सका। क्योंकि उसके दिमाग में लगातार धमाके होते जा रहे थे-
नहीं! यह नहीं हो सकता। मेरे पिता एक भगोड़े कातिल नहीं हो सकते नहीं।
कहां खो गए ध्रुव? तुम्हारे लिए फोन है। लाल चौक थाने के इंस्पेक्टर का! सिटी हॉस्पीटल से!
ध्रुव! मैं इंस्पेक्टर खत्री! उस गुरिल्ले की हालत में काफी सुधार है।--
--और साथ ही साथ हमको उसके बदन पर एक चिन्ह भी मिला है!
चिन्ह?

हां ! एक गोले के अंदर 'J' का चिन्ह बना हुआ !
PUBLIC PHONE
गोले के अंदर 'J' का चिन्ह !
J wan
यह तो 'जुपिटर सर्कस' का वह निशान है, जो हर जानवर पर लगा होता था। यानी वह 'गुरिल्ला' जुपिटर सर्कस का जानवर है...
...तभी मैं सोच रहा था कि वह इतना पहचाना हुआ सा क्यों लग रहा है। वह जरूर किंग होगा...
अ...हां, खत्री साहब। मैं सिटी हॉस्पिटल जा रहा हूं। अगर कोई उस गुरिल्ले को देखने आए तो उसे रोककर रखिएगा!
इस पूरे घटनाक्रम में जुपिटर सर्कस का नाम बार-बार उभरकर सामने आ रहा है। लेकिन इस नई जानकारी से एक बात तो साफ हो गई है कि उस गुरिल्ले को थीटर कोल पर साथ लाने वाला जरूर कोई जुपिटर सर्कस का ही आदमी है...
...परन्तु अगर वह हैटकोट-धारी आदमी जुपिटर सर्कस का ही था, तो मुझे देखकर भागा क्यों?
शायद अस्पताल में इससे मेरी दुबारा मुलाकात हो जाए!
ध्रुव का अंधेरे का यह तीर निशाने पर लगा था-
किंग इसी कमरे में है। मैं सामने से अंदर जाना नहीं चाहता...
...इसलिए इस रास्ते से अंदर जाकर उसकी हालत देख आऊंगा।
...और इससे पहले कि कोई मुझे देख पाए मैं वापस भी चला जाऊंगा।
लेकिन 'जैकी' का यह ख्याल गलत था-

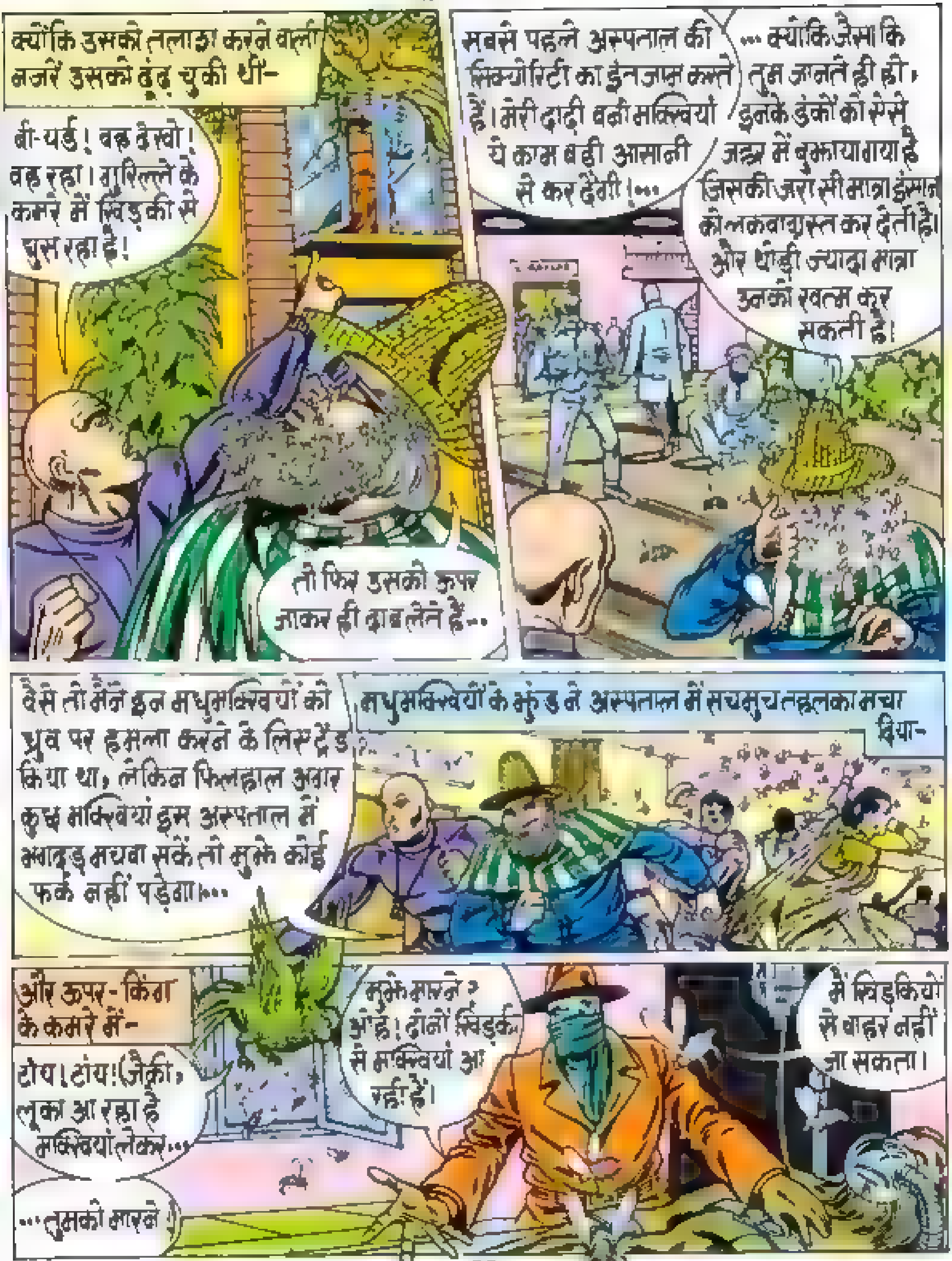
क्योंकि उसको तलाश करने वाली नजरें उसको ढूंढ चुकी थीं-
वी-यर्ड! वह देखो! वह रहा। गुरिल्ले के कमरे में खिड़की से घुस रहा है!
तो फिर उसको ऊपर जाकर ही दबा लेते हैं..
सबसे पहले अस्पताल की सिक्योरिटी का इंतजाम करते हैं। मेरी दाढ़ी वाली मक्खियां ये काम बड़ी आसानी से कर देंगी।...
...क्योंकि जैसा कि तुम जानते ही हो, इनके डंकों को ऐसे जहर में बुझाया गया है जिसकी जरा सी मात्रा इंसान को लकवाग्रस्त कर देती है। और थोड़ी ज्यादा मात्रा उनको खत्म कर सकती है।
वैसे तो मैंने इन मधुमक्खियों को ध्रुव पर हमला करने के लिए ट्रेंड किया था, लेकिन फिलहाल अगर कुछ मक्खियां इस अस्पताल में भगदड़ मचवा सकें तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।...
मधुमक्खियों के झुंड ने अस्पताल में सचमुच तहलका मचा दिया-
और ऊपर- किंग के कमरे में-
टोय! टोय! जेकी, लूका आ रहा है मक्खियां लेकर...
...तुमको मारने
मुझे मारने? ओह! दोनों खिड़की से मक्खियां आ रही हैं।
मैं खिड़कियों से बाहर नहीं जा सकता।

दरवाजे से ही बाहर निकलना...
लेकिन दरवाजे से बाहर निकलते ही जैकी का सामना बी-यर्ड से हो गया-
आह! भाग रहा था? पर अब तू बी-यर्ड से बचकर भाग नहीं सकता।
मेरी मधुमक्खियों के दस-बारह जहरीले डंक तेरा काम तमाम कर देंगे!
मेरा सारा शरीर ढका हुआ है बी-यर्ड! सिर्फ आंखों का जरा सा हिस्सा खुला है...
...इसलिए तेरी मक्खियों के डंकों को मुझ तक पहुंचने में समय लगेगा!
ओहो! यह ख्याल तो मेरे दिमाग में भी आया था। इसलिए मैं यह 'डार्ट गन' भी साथ लेता आया था। इसके नुकीले सिरे तेरे शरीर में घुस भी सकते हैं। और इन पर भी वही जहर लगा है जो मधुमक्खियों के डंक पर है।
डार्ट, शरीर में घुसते ही जैकी चीख मारकर गिर पड़ा-
आह! मेरे हाथ-पैर सुन्न हो रहे हैं। मुझ पर लकवे का सा असर हो रहा है।
ठीक समझा तू! अब तू हिल नहीं पाएगा, और मेरे डार्ट आराम से तेरे प्राण हर लेंगे।
डार्ट, जैकी के शरीर तक पहुचने के लिए चले तो जरूर...

लेकिन 'जेकी' के शरीर तक पहुंचे नहीं। एक चादर हवा में उड़ती हुई जेकी और हार्टी के बीच में आ गिरी-
और अगले ही पल-एक मजबूत हाथ ने जेकी के लगभग लकवाग्रस्त शरीर को स्टोर रूम में खींच लिया-
यह क्या? कौन... कौन है अन्दर?
मैं हूं। और अब तुम बताओ कि तुम कौन हो?
सुपर कमांडो ध्रुव! ... मैं? मैं हूं तुम्हारी मौत!...
...ये मधुमक्खियां मैं तुम्हारे लिए ही लेकर आया था। और किस्मत देखो कि तुम खुद यहीं आ गए।
अब मैं सिर्फ एक सीटी बजाऊंगा और पूरे अस्पताल में फैली मधुमक्खियां सीधी यहीं पर आकर तुम पर टूट पड़ेंगी। क्योंकि इनको तुम पर ही हमला करने के लिए सधाया गया है।

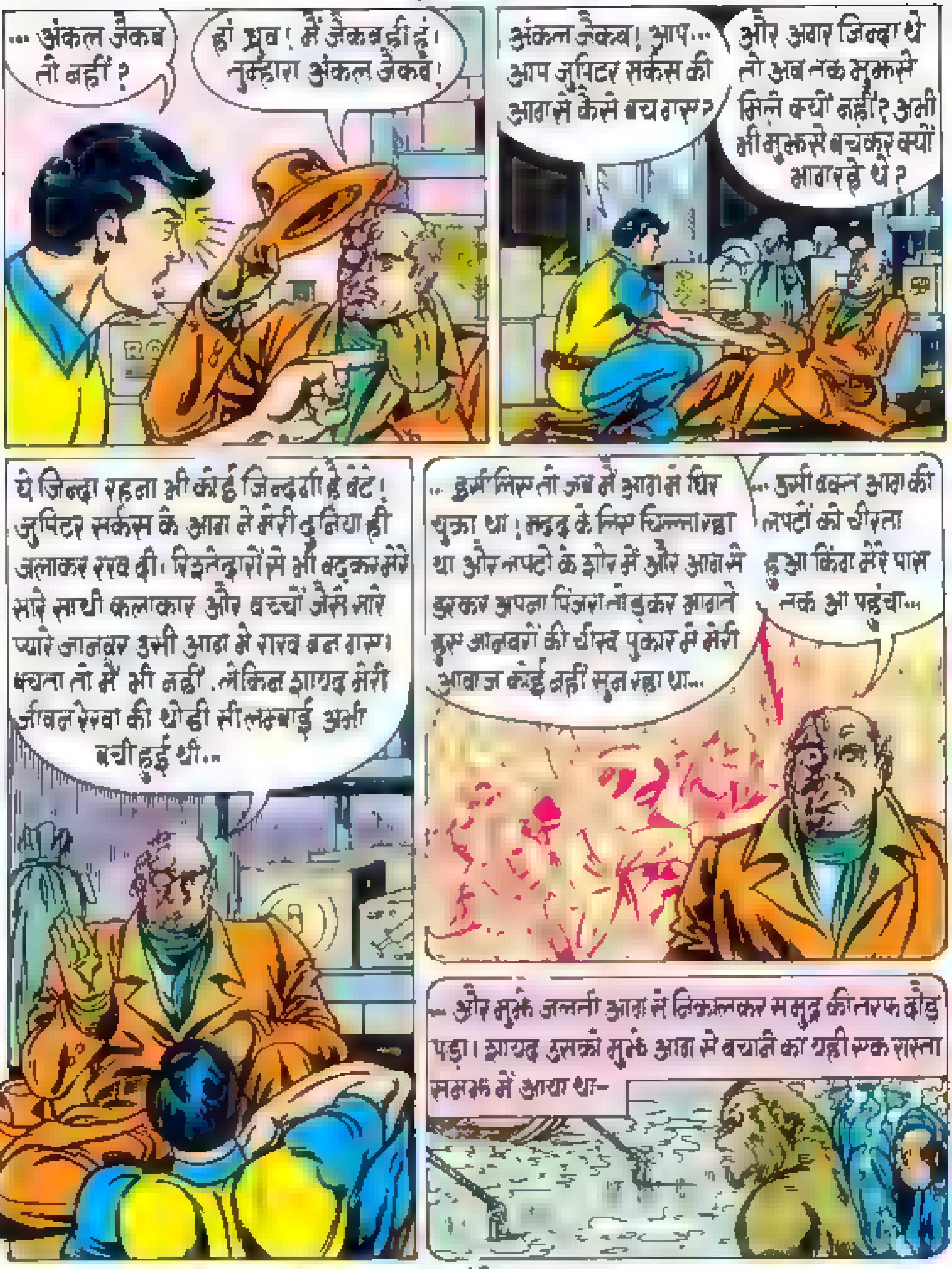
... अंकल जैकब तो नहीं ?
हां ध्रुव ! मैं जैकब ही हूं। तुम्हारा अंकल जैकब !
अंकल जैकब ! आप... आप जुपिटर सर्कस की आग से कैसे बच गए ?
और अगर जिन्दा थे तो अब तक मुझसे मिले क्यों नहीं ? अभी भी मुझसे बचकर क्यों भाग रहे थे ?
ये जिन्दा रहना भी कोई जिन्दगी है बेटे ! जुपिटर सर्कस के आग ने मेरी दुनिया ही जलाकर राख की। रिश्तेदारों से भी बढ़कर मेरे सारे साथी कलाकार और बच्चों जैसे मेरे प्यारे जानवर उसी आग में राख बन गए। बचना तो मैं भी नहीं... लेकिन शायद मेरी जीवन रेखा की थोड़ी सी लम्बाई अभी बची हुई थी...
... दुर्भाग्य से तो जब मैं आग में घिर चुका था। मदद के लिए चिल्ला रहा था और लपटों के शोर में और आग से डरकर अपना पिंजरा तोड़कर भागते हुए जानवरों की चीख पुकार में मेरी आवाज कोई नहीं सुन रहा था...
... उसी वक्त आग की लपटों को चीरता हुआ किंग मेरे पास तक आ पहुंचा...
– और मुझे जलती आग से निकालकर समुद्र की तरफ दौड़ पड़ा। शायद उसको मुझे आग से बचाने का यही एक रास्ता समझ में आया था–

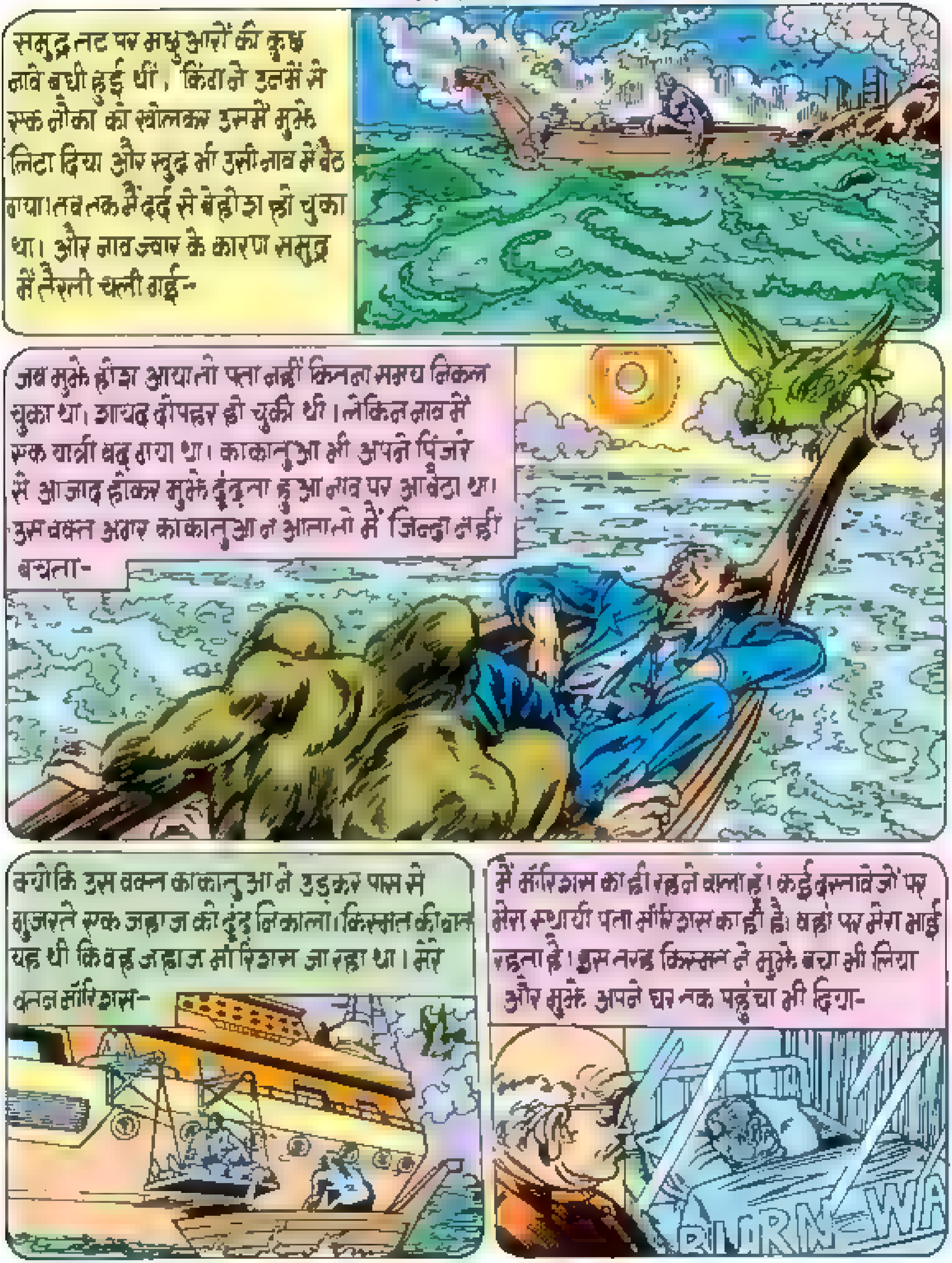
समुद्र तट पर मछुआरों की कुछ नावें बंधी हुई थीं, किरा ने इनमें से एक नौका को खोलकर इसमें मुझे लिटा दिया और खुद भी उसी नाव में बैठ गया। तब तक मैं दर्द से बेहोश हो चुका था। और नाव ज्वार के कारण समुद्र में तैरती चली गई-
जब मुझे होश आया तो पता नहीं कितना समय निकल चुका था। शायद दोपहर हो चुकी थी। लेकिन नाव में एक यात्री बढ़ गया था। काकानुआ भी अपने पिंजरे से आजाद होकर मुझे ढूंढता हुआ नाव पर आ बैठा था। उस वक्त अगर काकानुआ न आता तो मैं जिन्दा नहीं बचता-
क्योंकि उस वक्त काकानुआ ने उड़कर पास से गुजरते एक जहाज को ढूंढ निकाला। किस्मत की बात यह थी कि वह जहाज मॉरिशस जा रहा था। मेरे वतन मॉरिशस-
मैं मॉरिशस का ही रहने वाला हूं। कई दस्तावेजों पर मेरा स्थायी पता मॉरिशस का ही है। वहां पर मेरा भाई रहता है। इस तरह किस्मत ने मुझे बचा भी लिया और मुझे अपने घर तक पहुंचा भी दिया-
BURN-WA

मेरे भाई को समाचार-माध्यमों के जरिए से जुपिटर सर्कस की तबाही का सारा किस्सा और कारण तो मालूम हो गया था, लेकिन फिर भी उसको यह शक बना रहा कि कहीं यह सब कांड मेरी हत्या के लिए ही न रचा गया हो। इसीलिए उसने किसी को भी मेरे जिन्दा बचने की सूचना नहीं दी ...
... मेरी हालत बहुत खराब थी। मेरा पूरा दायां अंग बुरी तरह आग में झुलस गया था। मेरे बूढ़े शरीर को पूरी तरह से ठीक होने में दो साल से भी ज्यादा का समय लग गया। और ताकत वापस आने में एक साल और... इस दौरान मुझे तुम्हारी खबर समाचारों के जरिए मिलती रही। तुम्हारा हर कारनामा मेरे सीने को और चौड़ा कर देता था। मैं तुमसे मिलने का प्रोग्राम बना ही रहा था-
कि तभी, क्षितिज पर एक नया तूफान मंडराने लगा-
जब मेरे भाई ने मुझे वह सामान दिखाया जो सर्कस के जले मलबे से निकला था। और जिसे भारतीय अधिकारियों ने मेरे स्थायी पते पर यानी मेरे भाई के पास भिजवा दिया था-
उसी सामान में था वह छोटा सा बक्सा, जो श्याम के हाथों में उस वक्त था, जिस वक्त वह मुझे घायल अवस्था में मिला था-
और जिसे मैंने कभी खोलकर इसलिए नहीं देखा था क्योंकि उसके बारे में भूल चुका था।...
बक्सा? पिताजी का बक्सा क्या था उस बक्से में? और...और पापा आपको घायल अवस्था में कहां पर मिले थे? किसने घायल किया था उनको?

लेकिन इससे पहले कि जैकब कोई जवाब दे पाता, बाहर से आती चीखों की आवाज़ ने ध्रुव का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया–
ओह! मेरे छिप जाने के कारण मधुमक्खियों ने बाहर लोगों पर हमला करना शुरू कर दिया है। मुझे जाना होगा अंकल!...
...वर्ना मेरे कारण कई लोगों की जान खतरे में पड़ जाएगी। इन मक्खियों को नष्ट करना होगा। लेकिन मैं इनको नष्ट कैसे...
मुझे आपसे थोड़ी सी मदद चाहिए अंकल जैकब। आपके दस्ताने हैट और ओवरकोट!
ले जाओ ध्रुव! वैसे भी मेरे हाथ पैरों में अभी इतनी ताकत वापस नहीं आ पाई है कि मैं अपने-आप यहां से हिल भी सकूं।
...वह अस्पताल के बाहर बनी कैंटीन!...
...यहीं पर मक्खियों को ले जाना होगा!
और जब ध्रुव स्टोर रूम से बाहर निकला तो वह भी मक्खियों के लिए तैयार था–
और मक्खियां भी उसके लिए तैयार थीं–

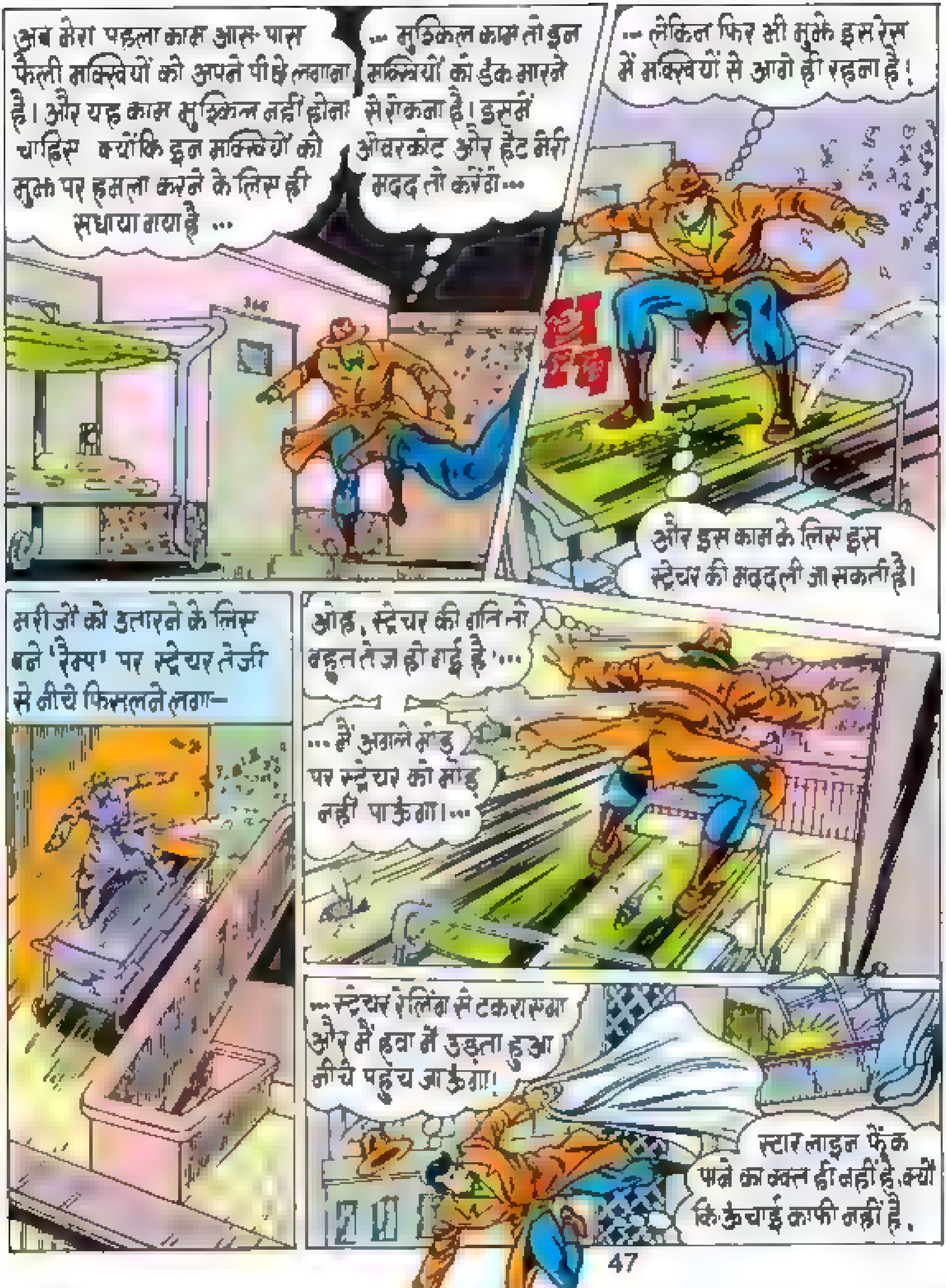
अब मेरा पहला काम आस-पास फैली मक्खियों को अपने पीछे लगाना है। और यह काम मुश्किल नहीं होना चाहिए क्योंकि इन मक्खियों को मुझ पर हमला करने के लिए ही सधाया गया है ...
... मुश्किल काम तो इन मक्खियों को डंक मारने से रोकना है। इसमें ओवरकोट और हैट मेरी मदद तो करेंगे...
... लेकिन फिर भी मुझे इस रेस में मक्खियों से आगे ही रहना है।
और इस काम के लिए इस स्ट्रेचर की मदद ली जा सकती है।
मरीजों को उतारने के लिए बने 'रैम्प' पर स्ट्रेचर तेजी से नीचे फिसलने लगा—
ओह, स्ट्रेचर की गति तो बहुत तेज हो गई है...
... मैं अगले मोड़ पर स्ट्रेचर को मोड़ नहीं पाऊंगा।...
...स्ट्रेचर रेलिंग से टकराएगा और मैं हवा में उड़ता हुआ नीचे पहुंच जाऊंगा।
स्टार लाइन फेंकने का वक्त ही नहीं है, क्योंकि ऊंचाई काफी नहीं है।

अब 'स्ट्रेचर' से गिरी ये चादर ही मुझे बचा सकती है। इसके चारों कोनों को पकड़कर इसको पैराशूट का सा रूप दिया जा सकता है...
कैंटीन
...और इसकी मदद से आराम से नीचे उतरा जा सकता है... मैं कैंटीन के सामने ही उतरा हूं और फिलहाल सारी मक्खियां अभी थोड़ी पीछे रह गई हैं।...
...अब यहीं पर इन मक्खियों की चिता बनेगी। शहद इकट्ठा करने वाले तो धुआं करके मक्खियों को भगाते हैं...
...यहां पर शायद धुआं करने का इन्तजाम न हो पर आग का इन्तजाम जरूर होगा...
KITCHEN
...वाह! कैंटीन खाली है, सभी मक्खियों से डर कर भाग चुके हैं। मेरा काम काफी आसान हो गया।
ध्रुव ने सबसे पहले कैंटीन के किचन में घुसकर गैस चूल्हों के बर्नरों को पूरा खोल दिया-
किचन में ज्वलनशील गैस तेजी से भरने लगी-
मुझे मक्खियों को किचन में ही रोककर रखना है। इसलिए तब तक मुझे भी यहां रुकना होगा...
...और इसमें पानी से भरा यह ड्रम मेरी मदद करेगा। इसमें घुसना पड़ेगा!
और मधुमक्खियों के किचन में आने तक ध्रुव खिड़कियां भी बन्द कर चुका था-
हाथ में गैस लाइटर लेकर ध्रुव पानी से भरे ड्रम में घुस गया-

कुछ ही सेकेंडों में किचन मधुमक्खियों से पूरी तरह से भर गया था–
लगभग पचास सेकेंड हो चुके हैं। अब तक किचन में कुकिंग गैस पूरी तरह से भर चुकी होगी, और सिलेंडर खाली हो गया होगा। यानी आग लगाने पर कोई विस्फोट नहीं होगा।...
...अब आग लगाने का समय आ गया है! गैस लाइटर जलाते ही चिंगारी फूटेगी...
...और पूरा किचन आग की लपटों से भर जाएगा। मक्खियों को मरने में एक पल से ज़्यादा समय नहीं लगेगा...
...और इससे पहले कि आग की लपटें मेरे शरीर को आंच पहुंचा पाएं...
...मेरा गीला शरीर कांच तोड़ता हुआ, सुरक्षित बाहर आ गिरेगा!
चलो! मधुमक्खियों का आतंक तो खत्म हुआ। अब अंकल जैकब की खैरियत पूछी जाए। कहीं वह 'बी-यर्ड' होश में न आ गया हो...
लेकिन स्टोर रूम के बाहर पहुंचकर ध्रुव आश्चर्य-चकित रह गया–
अरे! बी-यर्ड तो यहां से गायब है! इतनी जल्दी उसे होश कैसे आ गया?...
...कहीं उसने असहाय अंकल जैकब को...

...लेकिन स्टोर रूम में घुसते ही ध्रुव की जान में जान आ गई–
ओह! आप ठीक हैं अंकल! मैं तो समझा कि उस बी-यर्ड ने होश में आकर आपको...
...खैर छोड़िए। आइए मैं आपको यहां से ले चलता हूं। अब खतरा खत्म हो चुका है।
नहीं ध्रुव! खतरा अभी भी मौजूद है। और यह सब मुझे मारने के लिए है ताकि मैं तुमको कुछ भी न बता सकूं।
अभी तक तो मैं तुमसे इसलिए छिप रहा था कि कहीं अपने पिता श्याम के बारे में सच्चाई जानकर तुमको आघात नहीं पहुंचे। और मैं लूका को भी यही बताने से रोकना चाहता था पर अब अगर मैं तुमको कुछ भी बताए बगैर मर गया तो फिर सच्चाई तुमको कहीं से भी पता नहीं चल पाएगी।
पिताजी के बारे में सच्चाई?
आप... आप जानते थे? क्या उनका नाम रघुवंशी था? श्याम नहीं!
सुनो। मैं तुमको सारी बात सिलसिले से सुनाता हूं... पच्चीस साल पहले की बात है। उस वक्त जुपिटर सर्कस के शो कई देशों में होते थे... और उस बार हमारा सर्कस फ्रांस के एक शहर ल्योन में चल रहा था...
मेरा एक बहुत प्यारा घोड़ा था, सीजर। हर सुबह उस पर बैठकर मैं सैर के लिए जाता था। दोनों की वर्जिश हो जाती थी...
उस दिन सुबह जब मैं सीजर को नदी से पानी पिला रहा था एकाएक नदी का पानी लाल होने लगा–
सीजर! कोई घायल बहता हुआ इधर ही आ रहा है। जिन्दा है या मर गया है?

मैंने उस व्यक्ति को नदी से बाहर खींच लिया-
ये तो जिन्दा है। और यह तो भरनीय लहा रहा है। लेकिन कोई गोली इसके सिर को छूती हुई निकली है। अगर इसको तुरन्त डॉक्टरी सहायता न मिली तो ये मर जाएगा.
अरे! मैंने कुछ नहीं किया वे मुझे मार डालेंगे... बचा लो...
इतना बोलते-बोलते वह जवान बेहोश हो गया-
मैंने उसको तुरन्त सीजर पर लाद दिया-
ताकि मैं उसको डॉक्टरी सहायता पहुंचाकर उसकी जान बचा सकूं-
उसके हाथ में थमी सन्दूकची भी मैंने सीजर पर ही बांध दी-
मैं उसको लेकर वहां से चलने ही वाला था कि तभी झाड़ियों के पीछे से मुझे कुछ लोगों के बातें करने की आवाजें सुनाई पड़ीं-
तुमने ही तो कहा था कि वह हमको दिखे या पुलिस को, जिसे पहले दिखे, वही उसे गोली से उड़ा दे।
उस समय मुझे यह नहीं पता था कि तुम्हारा निशाना इतना कच्चा है...
... अब अगर वह बच गया तो सतर्क हो जाएगा! और इसको पकड़ना और मुश्किल हो जाएगा
एक पुलिस इंस्पेक्टर कुछ अपराधी टाइपलोगों से बातें कर रहा था। बातचीत फ्रेंच में हो रही थी। लेकिन फ्रेंच भाषा मुझे आती है। इसलिए मैं उनकी बातें समझ रहा था-

मुझे आभास हो गया कि इस घायल भारतीय युवक के खिलाफ अपराधी और पुलिस ने मिलकर कोई षड्यंत्र रचा है। और अगर यह युवक इनके हाथों में आ गया तो तुरन्त मार डाला जाएगा। अब मेरे सामने एक समस्या खड़ी हो रही थी,...
...क्योंकि उसी शाम, जुपिटर सर्कस को फ्रांस के जहाज द्वारा भारत रवाना हो जाना था। उस युवक को फ्रांस में छोड़ जाने का अर्थ था, उसकी शर्तिया मौत। मैंने उसको भारत ले जाने का फैसला कर लिया ताकि जब वह ठीक हो जाए तो मुझे अपनी कहानी सुना सके। और फिर मैं उसी के अनुसार काम कर सकूं।
लेकिन वह दिन कभी नहीं आया–
क्योंकि अपने जहाज में छिपाकर मैं उस युवक को भारत तक तो ले आया था, और समय के साथ-साथ उसका घाव भी ठीक हो गया। पर सिर में गोली लगने के कारण उसकी याददाश्त जाती रही थी। वह अपना असली नाम मुझे कभी नहीं बता पाया। उसको मैंने एक नया नाम दिया-श्याम और वह एक महान कलाबाज बन गया–
वह जिया भी जुपिटर सर्कस के लिए और मरा भी जुपिटर सर्कस के लिए–
इस दौरान कई सारी परेशानियों के कारण उस बक्से के बारे में मैं एकदम भूल गया जो श्याम के हाथों में था। और यही बक्सा भारतीय अधिकारियों ने मॉरिशस मेरे भाई के पास भेजा था–
क्या था, उस बक्से में अंकल?
उस बक्से में कुछ कपड़े थे। थोड़े फ्रांसीसी पैसे यानी फ्रैंक और एक फोटो!
फोटो?

हां! एक फोटो! जिसमें 'श्याम' एक लगभग 30 वर्ष के आदमी और 25 वर्ष की महिला के साथ खड़ा हुआ था। आगे व्हील चेयर पर एक पचास साल का आदमी भी बैठा हुआ था। पीछे बैकग्राउंड में एक विशाल और भव्य घर भी था।...
... मैं समझ गया कि ये जरूर श्याम के संबंधी होंगे। पच्चीस वर्ष पहले हुई घटना मेरे दिमाग में एक बार फिर कुलबुलाने लगी। साथ ही साथ श्याम के संबंधियों को यह बताने की कोई इच्छा भी हुई कि श्याम के एक बेटा भी है... मैं तुरन्त 'ल्योन' के लिए रवाना हो गया ... एक खरीदी हुई शिप पर!
... मेरे पास श्याम के संबंधियों को ढूंढने के लिए सिर्फ एक सूत्र था...
वहां पर श्याम के साथ हुए हादसे को ध्यान में रखते हुए मैंने और काका-तुआ को भी साथ में ले गया। काकातुआ को मैंने फ्रांस में ही खरीदा था क्योंकि वह अंग्रेजी के साथ साथ फ्रांसीसी भी समझ लेता था। इससे मुझे काफी मदद मिलने की उम्मीद थी।...
... वह आलीशान मकान! ल्योन पहुंचकर उस मकान को ढूंढने में मुझे कोई दिक्कत नहीं हुई...
... लेकिन इससे पहले कि मैं उस एस्टेटनुमा मकान में घुसता, मेरी नजर उन्हीं दोनों व्यक्तियों पर पड़ी, जो पुलिस के साथ पिस्तौल लिए श्याम का पीछा कर रहे थे। इतने सालों बाद भी मैं उनको पहचान गया।...
... इनको एस्टेट के अन्दर खुलेआम घूमते देखकर मेरा माथा ठनक गया। मैंने भी कुछ कहने से पहले सुनने की ठान ली, और काकातुआ को सारी बातें सुनने के लिए एस्टेट के अन्दर भेज दिया...

... और उसी से मुझे पता चला उस योजना का, जो तुमको मारने के लिए बनाई जा रही थी।
कैसी योजना? और मुझे मारने के लिए क्यों?
बस! जितना बोलना था, वह तू बोल चुका बूढ़े, ... और मुझे तेरे बारे में जितना जानना था वह मैं जान चुका!
अब तू कभी नहीं बोलेगा!
लूका! यानी वही नकाबपोश! पर...पर यह स्टोररूम में छिपा क्या कर रहा था? और... यह लूका आखिर है कौन?
लूका
इससे पहले कि जैकब कोई जवाब दे पाता, लूका के एक ही अकल्पनीय शक्ति से भरे वार ने उसके श्वास छीन लिए-
अंकल जैकब!

तूने अंकल जेकब पर हाथ उठाया ? इसका हर्जाना तुमको अपना मुंह तुड़वाकर चुकाना होगा .
इतनी हिन्दी तो मैं भी समझ लेता हूं कि तेरी धमकी का मतलब समझ लूं।...
... लेकिन मैं यहां पर अपना मुंह तुड़वाने नहीं, तेरा मुंह बन्द करने आया हूं।
ध्रुव को लूका की अमानवीय शक्ति का पूरा अन्दाजा था-
इसने गुरिल्ले किंग तक को पीट-पीटकर घायल कर दिया था। मुझे इसके वारों से बचना होगा, वर्ना मेरे लिए तो इसके एक-दो वार ही बहुत होंगे !
ध्रुव, लूका के वारों से बच तो रहा था, लेकिन सामानों से भरे स्टोररूम में बचने के लिए जगह बहुत कम थी-
ध्रुव एक कार्टन से टकराकर गिरा-
और लूका का शिकन्जा उसकी गर्दन पर आ कसा-
लेकिन इससे पहले कि लूका का घूंसा, ध्रुव की खोपड़ी के टुकड़े कर देता-

जैकब के वार ने लूका के हाथ रोक लिए-
ओह! बड़ी सख्त जान है तू बूढ़े। बड़ी जल्दी होश में आ गया।
लेकिन मैं तुम दोनों को एक साथ संभाल सकता हूं।
लूका के हाथ में एक लम्बा खंजर चमक उठा-
और जैकब के कुछ समझ पाने से पहले ही खंजर उसके पेट में धंस चुका था-
इस दृश्य ने, ध्रुव से उसके सोचने-समझने की ताकत छीन ली-
आऽऽह!
अब तू हत्यारा बन गया है लूका! और हत्यारों को ध्रुव कभी नहीं छोड़ता...
अब ध्रुव, लूका पर भारी पड़ रहा था-
लूका की कैप्सूल खाने के कारण आई अमानवीय शक्ति भी उसकी कोई मदद नहीं कर पा रही थी-
ओह, इस वक्त इसको मारने की बात तो दूर, मैं अपनी जान ही बचा लूं तो काफी होगा।...
...इससे दुबारा निपट लूंगा यह जैकब को घायल देखकर पागल सा हो गया है।...

फिलहाल यहां से भाग निकलना ही इस समस्या का एकमात्र हल है।
लूका उसी रोशनदान के रास्ते बाहर निकल गया, जिससे वह अंदर आया था-
ध्रुव, लूका के पीछे नहीं जा सका। क्योंकि उसको जेकब का हाल देखना था-
घबराइए मत अंकल! चाकू मैंने निकाल दिया है। आप अस्पताल में ही हैं। मदद मिलने में देर नहीं लगेगी।
लेकिन इससे पहले कि ध्रुव मदद के लिए किसी को बुला पाता, स्टोर का दरवाजा अपने-आप खुल गया-
यहां क्या गड़बड़...?
य... यह क्या?...
...तु...तुमने इस आदमी को मार डाला ध्रुव?
मैंने इस आदमी को मारा नहीं बचाया है और इसको तुरन्त खून की जरूरत है।...
...मुझसे सवाल करने के बजाय इसको डॉक्टर तक पहुंचाओ।
वह तो हम करेंगे ही। लेकिन हाथ में खून सना चाकू, फर्श पर एक घायल बूढ़ा और कमरे में किसी और का न होना, यह सारे सबूत तुम्हारे खिलाफ हैं। आई एम सॉरी, पर मुझे तुमको हिरासत में लेना होगा।

★विस्तारपूर्वक जानने के लिए पढ़ें 'प्रतिशोध की ज्वाला' सुपर कमांडो ध्रुव की पहली कॉमिक।

★देखिए पेज 56 का पहला फ्रेम।

यानी...लूका मेरा रिश्तेदार है। नहीं !... यह नहीं हो सकता। कभी नहीं।
हुम ! मामला और चक्करदार होता जा रहा है। अगर लूका ध्रुव का रिश्तेदार है तो उसने ध्रुव को मारने की कोशिश क्यों की ?...
...और रघुवंशी पर एक हत्या का आरोप होने के बावजूद भी उस पर कातिलाना हमला क्यों किया गया? उसको अगर पुलिस पकड़ लेती तो उसको वैसे ही फांसी या लम्बी कैद हो जाती।...
कहीं पर कोई गहरी साजिश रची जा रही है पापा ! इसी साजिश में मेरे पिता को खूनी बनाया गया, और फिर मुझे मारने की कोशिशें की गई।...
...इस साजिश ने कई सवालों को पैदा कर दिया है। और अगर उनका जवाब पाना है तो मुझे जाना ही होगा... 'फ्रांस'! ...
...और उसके शहर ल्योन में या तो मिलेंगे मुझे सारे जवाब...
...और या मिलेगी... मौत!

समाप्त